जापान की कथाएँ

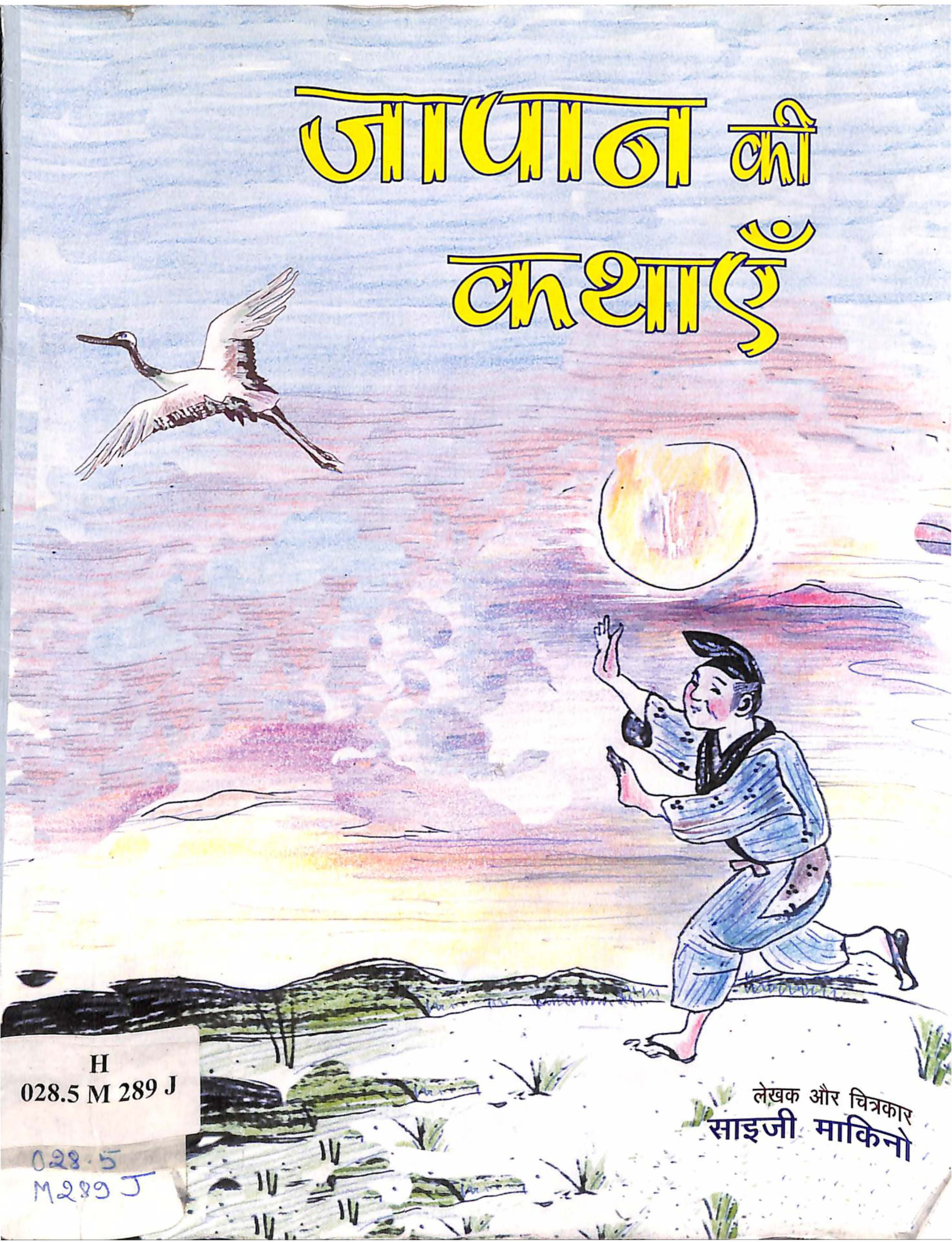

लेखक और चित्रकार
साइजी माकिनो

H
028.5 M 289 J
028.5
M289J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

साइजी माकिनो

साहित्य अकादेमी

Japan Ki Kathayen : A collection of ancient and folk stories of Japan by Saiji Makino in Hindi, Sahitya Akademi, New Delhi (2001), Rs. 40/-

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 2001 ई.

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली-110001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली-110001

H
028.5
M 289 J

क्षेत्रीय कार्यालय :
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड
कलकत्ता-700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तारामणि, चेन्नई 6
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर मार्ग, बंगलौ

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 289 J
00115990

115990
17.11.04

ISBN 81-260-1218-8

मूल्य : चालीस रुपये

शब्द-संयोजक : सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 • फोन : 2824217

कथा-क्रम

भूमिका

भाग एक : पौराणिक कथाएँ

जापान के जन्म की कथा / 9

यामाता का भयानक साँप / 17

इनाबा का सफ़ेद ख़रगोश / 21

भाग दो : लोककथाएँ

इक्कू की कहानियाँ

- मधु-चोरी / 27
- पुल और किनारा / 30
- भिखारियों की भीड़ / 31
- शेर की क़ैद / 32

अंजू और जुसिओ / 34

निर्दयी राजा और सयानी बुढ़िया / 45

लालची बूढ़ा / 49

अप्सरा के अनोखे कपड़े / 53

ओएयामा का दानव-हरण / 58

सारस का प्रतिदान / 63

इजानागि और इजानामि द्वारा जापान का निर्माण

जापान की कथाएँ आश्चर्य, रहस्य, वैचित्र्य, वीरता आदि भावों से भरी हुई हैं। इनमें मानव-मन की जिज्ञासा भी क्रीड़ा करती हुई दिखाई देती है। आकाश, वायु, वृक्ष, कीड़े-मकोड़े कैसे उत्पन्न हुए? मानव कब जन्मा? सूर्य कहाँ से आया? उसे किसने बनाया? वह नित्य प्रकाशित होता है, किन्तु उसका प्रकाश या ताप नहीं घटता यह शक्ति उसे किसने प्रदान की? मनुष्य किसकी शक्ति से जीवित रहता है? इसी प्रकार के अनेक प्रश्नों के उत्तर जापानी पौराणिक साहित्य में मिलते हैं।

जापान में व्यक्ति के नाम के पीछे मिकोतो (Mikoto) यानी 'प्राण' लिखे जाने की परम्परा है। माना जाता है कि सभी लोगों के प्राण ईश्वर के प्राणों का भाग हैं, इसलिए इनोची-मिकोतो (Inochi–Mikoto) लिखकर 'अमुक मिकोतो' या अमुक 'मिकोतो, पुकारा जाता है। इस प्रकार स्रष्टा के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट किया जाता है। इसका एक और लाभ यह है कि मनुष्य यह कल्पना करके आनन्दपूर्वक रहता है कि अनन्त दयासागर स्रष्टा उसकी रक्षा कर रहा है। जापान की यह प्राचीन संस्कृति युग-युग से, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती चली आ रही है।

जापानी भाषा में अनेक प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनमें प्रतीकात्मक शैली में बहुत-सी जानकारियाँ हैं। इस प्रकार का सबसे पुराना ग्रन्थ है —'कोजिकी'। इसमें प्राप्त प्राचीन कहानियों को 1286 वर्ष पूर्व गेंमेइ (Genmei) सम्राट के काल में ओहोनोया सुमारो (Ohonoya Sumaro) ने हिएदानोअरे की बोली के रूप में लिपिबद्ध किया था। इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ में जापान के जन्म की कथा है।

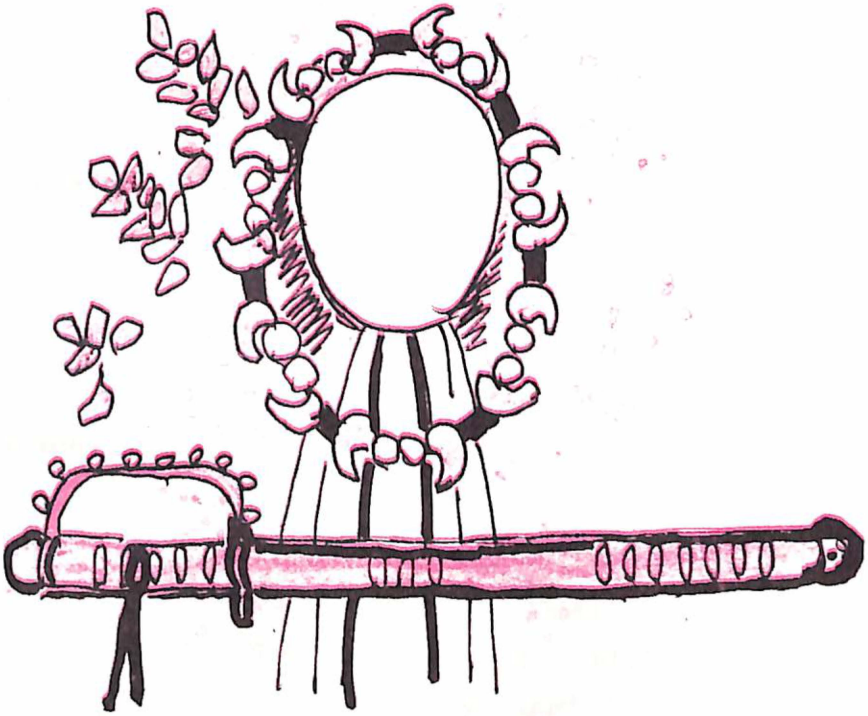

जापानी राजपरिवार

वशं–परंपरा के तीन प्रतीक

1. आईना
2. रत्न
3. तलवार

1

जापान के जन्म की कथा

वह आकाश और पाताल की शुरुआत का समय था। आकाश से भी ऊपर 'तोकाआमाहारा' नामक स्थान पर विश्व के स्रष्टा का निवास था। उसी समय 'अमेनोमिनाकानुसि' नामक एक देवता था। वह सब जगह रहता था, चाहे वह जगह छोटी हो या बड़ी या फिर चाहे साफ़ हो या गन्दी। अमेनोमिनाकानुसि ने अनेक देवी-देवताओं को जन्म दिया। उन्हीं में 'इजानागि' और 'इजानामि' भी थे।

एक दिन अमेनोमिनाकानुसि ने इजानागि और इजानामि को अपने पास बुलाकर आदेश दिया, "मैं दुनिया की सारी वस्तुएँ बनाने को पूरी तरह तैयार हो गया हूँ, इसलिए तुम जाओ और एक नये देश का निर्माण करके उसे बसाओ।" इतना कहकर उसने उन्हें 'अमेनोहोको' नामक हथियार दिया। दोनों ने वह हथियार ले लिया और बादल पर बैठकर प्रस्थान किया।

मार्ग में एक विशाल पक्षी उन्हें निगलने के लिए प्रकट हुआ। यह देखकर इजानागि ने हथियार घुमाया। इससे बादल हट गया और एक सुंदर पुल निकला। इजानागि ने इजानामि का हाथ पकड़ा और पुल पर उतर गया। उन्होंने पुल से नीचे देखा। लेकिन वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इजानागि ने फिर वही हथियार घुमाया, तो नीचे से एक मधुर आवाज़ सुनाई दी। इजानागि ने हथियार ऊपर उठाया। वह नमकीन पानी से भीगा हुआ था और उससे बूँदें टपक रही थीं।

अकस्मात् कुहरा समाप्त हो गया। इजानागि और इजानामि ने देखा कि जहाँ नमकीन पानी की बूँदें टपक रही थीं, वहाँ एक टापू बन गया है। दोनों उस टापू पर उतर गए। वहाँ 'आमेनोमिहासिरा' नामक एक खम्भा था। इजानागि उसके बाईं ओर गया और इजानामि दाईं ओर। इस प्रकार दोनों मिल गए और प्रेम के साथ हाथ मिलाकर उसी जगह पर सो गए।

जब सुबह हुई तो दोनों ने देखा कि सूर्योदय के साथ ही वहाँ एक सुन्दर टापू बन गया है। वे बहुत खुश हुए और उस नए टापू पर चले गए। उन्होंने उसे 'आवाजि' नाम दिया। वे उस

टापू के पहाड़ की चोटी पर चढ़कर चारों ओर देखने लगे। उन्होंने देखा कि जहाँ दूर समुद्र में हिलोरें उठ रही थीं, वहाँ चार टापुओं का जन्म हुआ। ये टापू पहले से बड़े थे। उन्हें 'सिकोकु' नाम दिया गया। वे दोनों सिकोकु के सबसे ऊँचे पहाड़ की चोटी पर चढ़कर चारों ओर देखने लगे, तो 'ओकि' और 'क्यूश्यू' नामक टापुओं का जन्म हुआ। उसके पश्चात 'इकि', 'त्सुसिमा' और 'सादो' नामक टापू जन्मे। अन्त में सबसे बड़े टापू 'होंश्यू' (Honshu) का जन्म हुआ। इन सबको मिलाकर 'ओओयासिमा' नामक देश बना। ओओयासिमा अर्थात् आठ बड़े टापुओं का देश। यही आज का जापान है।

टापुओं के इस देश के जन्म के पश्चात् उस पर शासन करनेवाले पैंतीस देवी-देवताओं का जन्म हुआ और उनका पालन-पोषण करने के लिए अनेक वस्तुएँ बनीं। इन वस्तुओं को इजानामि ने उत्पन्न किया था।

एक दिन इजानामि की मृत्यु हो गई। इजानागि अपनी देवी-पत्नी की मृत्यु से शोकाकुल हो गया। उसने इजानामि का पीछा किया और दौड़ते-दौड़ते देवी की दुनिया में प्रवेश कर गया। उसने वहाँ पहुँचकर देखा कि उस मृत्यु-देश में सड़े हुए शव हैं और बहुत-सी राक्षसिनियाँ बैठी हैं।

इजानागि ने उस मृत्यु-देश में अपनी पत्नी से विदा ली और ओओयासिमा (जापान) वापस लौट आया। उसने अपनी छड़ी नदी के किनारे खड़ी कर दी तथा पवित्र नदी में स्नान किया। उस छड़ी से एक देवता जन्मा। इजानागि ने अपने शरीर के वस्त्र एक-एक करके फेंक दिए। उनमें से एक-एक देवता का जन्म हुआ। संध्या होने पर वह नदी से समुद्र में गया और स्नान करने लगा। वहाँ समुद्र की रक्षा करनेवाले देवता का जन्म हुआ। स्नान के बाद इजानागि रात भर के लिए गहरी नींद में सो गया।

दूसरे दिन फिर समुद्र में स्नान करने गया और तन-मन से पवित्र हुआ। उसने जब दाएँ हाथ से दाईं आँख धोई तो 'आमातेरासु' नामक महादेवी का जन्म हुआ। दुनिया की सच्चाई को 'आमेनोमिनाकानुसि' कहा जाता है। उसी सच्चाई के आदेश के अनुसार देश का निर्माण करने वाले इजानागि के पवित्र स्नान से देश पवित्र हुआ और 'आमातेरासु' महादेवी का जन्म हुआ। अंधकार

सूर्य की अवतार आमातेरासु महादेवी, जो इजानागि और इजानामि की बड़ी बेटी है।

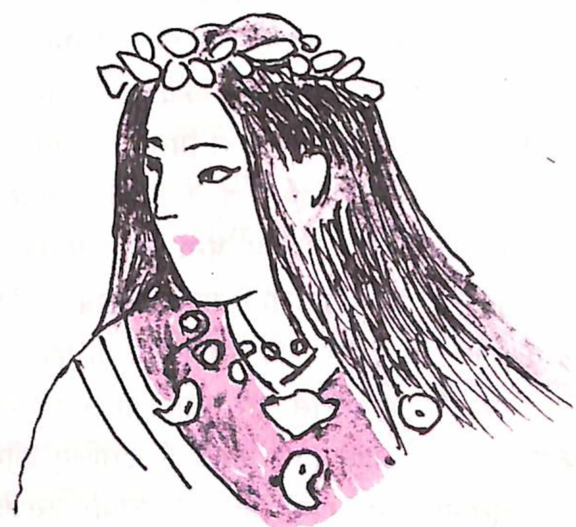

मिटानेवाले सूर्योदय के समान ही आमेनोमिनाकानुसि का अवतार आमातेरासु महादेवी थी। उसी समय आकाशवाणी हुई— ''तुम सूर्य-अवतार हो, ताकामा-गाहारा का शासन करोगी।'' इसके बाद जब इजानागि ने बाईं आँख धोई तो 'त्सुकियोमि' नामक देवता पैदा हुआ। यह चन्द्रमा का अवतार था। इसलिए इसने रात को प्रकाशित किया।

इजानागि द्वारा नाक की सफ़ाई किए जाने से 'सुसानोओ' देवता का जन्म हुआ। उसे समुद्र का शासन यानी संसार का शासन सौंपा गया। लेकिन वह अपना कोई काम न कर लगातार बस रोता ही रहा। जब उसके पितृ-देव ने रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि वह यमलोक में अपनी माता से मिलना चाहता है। इजानागि ने उसे समझाया कि वह अंधकार और मृत्यु का देश है, इसलिए वहाँ जाना ठीक नहीं है। इस् पर भी सुसानोओ ज़िद करता रहा। वह किसी भी हालत में यमलोक जाना चाहता था। उसके हठ पर इजानागि को गुस्सा आ गया और वह सुसानोओ से बोला, ''तुम्हारे जैसे हठी का यहाँ कोई काम नहीं है। तुम यहाँ से चले जाओ। फिर कभी लौट कर मत आना।''

सुसानोओ रोते हुए वहाँ से चल पड़ा। वह अपनी माँ से मिलना चाहता था, लेकिन ऐसा करके वह पिता के पास नहीं लौट सकता था। यह सोचकर उसे बहुत दुःख हुआ। उसने तय किया कि वह अपनी बड़ी बहन आमातेरासु के पास जाएगा। वह आकाश की ओर चल पड़ा।

सुसानोओ बहुत बलशाली और वीर देवता था। ताकामागाहारा के देवता उसे देखकर भयभीत हो गये। वे आशंका करने लगे कि कहीं वह आमातेरासु पर आक्रमण न कर दे। उन्होंने आमातेरासु के केश और वस्त्र बदलकर उसे पुरुष जैसा बना दिया तथा रत्नों से सजा दिया। सुसानोओ ने आकर अपनी बड़ी बहन को प्रणाम किया। आमातेरासु ने उससे पूछा कि वह आकाश पर क्यों आया है? उसने उत्तर दिया कि वह माँ से मिलने के लिए रो रहा था, इस पर पिता ने उसे निर्वासित कर दिया, इसलिए अब वह अपनी बहन के पास आया है।

महादेवी ने कहा, ''तुम अन्य देवताओं को आश्वासन दो कि तुम्हारा मन साफ़ है, तभी यहाँ रह सकते हो।'' सुसानोओ ने सबको आश्वासन दिया। उसने कहा कि अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए वह देवात्मा को बुलाकर बच्चों को जन्म देगा।

महादेवी आमातेरासु और सुसानोओ आकाशगंगा के दोनों किनारों पर खड़े हो गए। महादेवी ने कहा, ''मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ, इसलिए क़ीमती तलवार मुझे दे दो।''

सुसानोओ ने अपनी प्राणप्रिय तलवार उसे दे दी।

महादेवी ने उस तलवार के तीन टुकड़े करके पवित्र जल से साफ़ किया और मुँह में डालकर ख़ूब चबा-चबाकर फूँक दिया। उसके मुँह से सफ़ेद धुआँ निकला, जिसमें से तीन देवियाँ प्रकट हुईं।

अब सुसानोओ की बारी थी। वह बोला, ''बहन, अपने बाएँ केशों में सजा रत्न मुझे दे दो।''

महादेवी ने रत्न दे दिया। सुसानोओ ने उस रत्न को पवित्र जल से साफ़ किया और रगड़-रगड़ कर मधुर आवाज़ निकालने लगा। फिर उसने उस रत्न को मुँह में डालकर ख़ूब चबाया और ज़ोर से फूँक मारी। चारों ओर साँस के कुहरे का सफ़ेद धुआँ फैल गया, जिसमें से पाँच देवता प्रकट हुए।

महादेवी ने सुसानोओ से कहा, ''पहले उत्पन्न तीन देवियाँ तुम्हारी हैं और बाद में उत्पन्न पाँच देवता मेरे।''

सुसानोओ गर्व से बोला कि उसके मन में कोई कुविचार नहीं था, इसी से इतनी सुन्दर देवियों का जन्म हुआ है, इसलिए जीत उसकी हुई है। यह कहकर वह बहुत ख़ुश हुआ। उसने बहुत शराब पी। नशा चढ़ जाने पर वह एक पागल घोड़े पर चढ़कर इधर-उधर दौड़ने लगा। उसने खेतों और फ़सलों को नष्ट कर दिया। पागल घोड़े ने लीद करके महादेवी की पूजा की वेदी को भी गन्दा कर दिया। इतने पर भी आमातेरासु नाराज़ नहीं हुई। उसने सोचा कि नशा उतर जाने पर सब ठीक हो जाएगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। सुसानोओ की हरकतें बढ़ती गईं।

महादेवी के पास एक हथकरघा था, जिस पर वह एक बुनकर औरत से कपड़ा बुनवाती थी, ताकि देवताओं को भेंट दे सके। सुसानोओ ने उस पवित्र हथकरघे पर घोड़े का शव डाल दिया। इससे बुनकर औरत भयभीत हो गई और काम छोड़कर भाग गई।

महादेवी आमातेरासु अपने भाई को प्रेम करती थी, इसलिए उसने उसके पापों को अपने कन्धों पर ले लिया। वह प्रायश्चित्त करने के लिए 'आमानोइवाया' नामक गुफा में जाकर तपस्या करने लगी। सूर्य की अवतार महादेवी के छिप जाने से सारा संसार अंधकार में डूब गया। राक्षस-राक्षसिनियाँ ख़ुशी में शोर मचाने लगे। दूसरी ओर सारा संसार सर्दी से काँपने लगा और पेड़-पौधे सूखने लगे।

यह देखकर देवता चिन्ता में पड़ गए। वे सोचने लगे कि ऐसा ही रहा, तो सारा संसार नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा, इसलिए किसी तरकीब से महादेवी को गुफा से बाहर निकालना चाहिए। देवताओं ने एक सभा करके निश्चय किया कि एक आनन्द-महोत्सव का आयोजन किया जाए। इससे निष्काम भाव से सबका कल्याण करनेवाली महादेवी प्रसन्न होगी। उन्होंने ज़ोर से बाँग देनेवाले मुर्ग़े एकत्र

किए। साथ ही, शिल्पकार को बुलाकर रत्न और शीशे बनवाए, ताकि रत्नों की रगड़ से तीव्र ध्वनि हो और शीशे के प्रकाश से चमक और उजाला छा जाए।

एक देवता पर्वत से एक पवित्र वृक्ष उखाड़ लाया, जिसकी चोटी पर रत्नों के गुच्छे बाँध दिए गए। उसके तने पर शीशे टाँग दिए गए और जड़ों को सफ़ेद काग़ज़ से निर्मित पवित्र झाड़न से सजा दिया गया। देवी-देवता महोत्सव-स्थल पर एकत्र हो गए। यज्ञ की अग्नि जलने लगी। एक देवता मंत्रपाठ करने लगा। सबसे शक्तिशाली देवता 'अमेनोताचिकाराओ नो कमि' गुफा-द्वार के निकट छिपकर खड़ा हो गया।

तभी ढोल और बाँसुरी की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। एक नृत्यांगना उल्टी नाद से बने मंच पर नृत्य करने लगी। नृत्य करते-करते उसके वस्त्र एक-एक कर खुलकर गिरने लगे। उसके खुले अंग-प्रत्यंग देखकर देवता हँसने लगे। इस प्रकार वहाँ भारी कोलाहल होने लगा। गुफा के भीतर महादेवी ने भी इस कोलाहल को सुना।

जब कोलाहल बढ़ता ही गया तो महादेवी ने गुफा का द्वार थोड़ा-सा खोला और नृत्यांगना से पूछा, "मेरे गुफा के भीतर छिप जाने से आकाश-पाताल अंधकार में डूब गए होंगे, फिर भी यह आनन्दभरा कोलाहल क्यों हो रहा है?"

नृत्यांगना ने उत्तर दिया, "महादेवी! आपसे भी अधिक तेजस्वी एक देवी का आगमन हुआ है, इसी कारण सारे देवता आनन्द मना रहे हैं। आप स्वयं उस देवी को देख लीजिए।"

महादेवी के मन में उस देवी को देखने की इच्छा पैदा हुई। देवताओं ने पवित्र-वृक्ष पर लटके शीशे को महादेवी के सामने कर दिया। शीशे में अपना तेजस्वी प्रतिबिम्ब देखकर महादेवी ने समझा कि यह कोई दूसरी पवित्र देवी है। गुफा के भीतर से सूर्य की किरणें और ताप बाहर आ रहा था। इससे चारों ओर चकाचौंध फैल गई। एकाएक गुफा-द्वार के निकट छिपे शक्तिशाली देवता ने हाथ पकड़कर महादेवी को बाहर खींच लिया। गुफा के द्वार पर रस्सी बाँध दी गई थी, ताकि महादेवी फिर अंदर न चली जाए। इस प्रकार जापान देश के साथ सम्पूर्ण जड़-चेतन संसार प्रकाशमान हो उठा।

इसके बाद देवताओं ने एक सभा करके विचार किया कि महापापी सुसानोओ को उसके पापों का दण्ड दिया जाना चाहिए। तय किया गया कि उसकी दाढ़ी-मूँछ और हाथ-पैरों के नाख़ून काटकर देवलोक से निर्वासित कर दिया जाए।

सुसानोओ ने कई पाप किए थे। एक दिन भूख लगने पर उसने एक देवी से भोजन माँगा।

देवी ने अपने मुख, नाक और नितम्ब से खाद्य पदार्थ निकालकर स्वादिष्ट भोजन तैयार किया। सुसानोओ यह सब देख रहा था।

जब देवी भोजन लेकर उसके सामने पहुँची तो वह क्रोधित हो गया, बोला "तुम मुझे इतना गन्दा भोजन क्यों खिला रही हो ?" इससे पहले कि वह कुछ उत्तर देती, सुसानोओ ने उसे मार डाला। मृत देवी के सिर से रेशम के कीड़े, आँखों से धान और तरह-तरह की फ़सलें पैदा हुईं। असीम कृपावाली अन्न की देवी के मर जाने पर सभी मानव खेती करने को विवश हो गए।

❒

2

यामाता का भयानक साँप

सुसानोओ, ताकाआमाहारा से निर्वासित होकर इजुमो नामक देश की हिइया नदी के उद्गम पर स्थित तोरिकामी नामक पहाड़ पर उतरा। उसने चारों ओर देखा और आश्चर्य में भरकर सोचा, 'यह मैं कहाँ आ पहुँचा?'

थोड़ा आश्वस्त होने के बाद वह मन ही मन कहने लगा, ''मैंने ताकाआमाहारा में बहुत उत्पात मचाया था। आमातेरासु महादेवी की तेजस्वी पवित्र आत्मा के कारण ही मेरी रक्षा हुई और मैं जीवित इस स्थान तक आ सका। अब मेरा कर्त्तव्य है कि मैं यहाँ के लोगों के बीच आमातेरासु के आदर्शों और यश का प्रचार करूँ।''

किन्तु यहाँ आस-पास कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ रहा था। सुसानोओ चिन्ता में पड़ गया कि इस निर्जन में वह अपना कार्य कैसे करेगा? उसी समय उसकी दृष्टि नदी की धारा के बीच बहकर आती 'हासि'[1] पर पड़ी। वह बहुत खुश हुआ। 'यह तो हासि है। इसका अर्थ है कि यहाँ कोई न कोई आदमी ज़रूर रहता है।' यह सोचकर वह नदी के किनारे-किनारे चल पड़ा। उसे अचानक किसी के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह उसी दिशा में बढ़ गया। उसे पेड़ के नीचे एक झोंपड़ी दिखाई दी। रोने की आवाज़ वहीं से आ रही थी।

सुसानोओ झोंपड़ी के द्वार पर पहुँचा और उसके स्वामी को पुकारा, किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। थोड़ी प्रतीक्षा के बाद वह झोंपड़ी के भीतर घुस गया। उसने देखा कि एक बूढ़ा और बुढ़िया एक लड़की को घेरे फूट-फूटकर रो रहे हैं। उसने उनसे रोने का कारण पूछा, तो बूढ़े ने बताया, ''मेरी आठ लड़कियाँ थीं। हर साल यामाता नामक भयंकर साँप आता है और एक लड़की को खा जाता है। इस तरह वह मेरी सात लड़कियाँ खा चुका है। अब केवल एक यही बची है। लेकिन अब फिर यामाता के आने का समय आ गया है। हमारे रोने का यही कारण है।''

1. हासि   चॉप-स्टिक, जिससे जापानी लोग खाना खाते हैं।

इस बातचीत को सुनकर उस लड़की ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। वह बहुत सुन्दर थी। सुसानोओ उसकी ओर देखता रह गया। उसने मन ही मन सोचा कि इतनी सुन्दर लड़की को उस साँप के मुँह से बचाना चाहिए। उसने बूढ़े से साँप के विषय में पूछा। बूढ़े ने बताया, "यामाता बड़ा भयंकर साँप है। उसके आठ सिर और आठ पूँछ हैं। उसकी आँखें लाल-लाल जलती रहती हैं। उसका शरीर इतना विशाल है कि आठ पहाड़ों और आठ घाटियों को पार करते हुए उस पर काई जम जाती है तथा अनेक पौधे उग आते हैं।"

यह सुनकर सुसानोओ ने पक्का निश्चय किया कि वह भयंकर यामाता को मार डालेगा और उस सुन्दर कन्या की रक्षा करेगा।

उसने बूढ़े को आदेश दिया कि वह ऐसा बाड़ा तैयार करे, जिसमें आठ दरवाज़े हों। प्रत्येक दरवाज़े पर एक बड़ा मटका रख दे और उसे तेज़ शराब से भर दे। इस प्रकार का बलशाली सहायक पाकर बूढ़ा, बुढ़िया और वह लड़की काफ़ी उत्साहित हुए। बूढ़ा बोला कि वह आदेशानुसार सब प्रबन्ध करेगा। इसके बाद सुसानोओ बोला, "क्षमा करें, मुझे पहली नज़र में ही आपकी पुत्री से प्रेम हो गया है। मेरी इच्छा है कि वही मेरी पत्नी बने।"

बूढ़े ने पूछा, "आपका क्या परिचय है?"

सुसानोओ ने उत्तर दिया, "मेरा नाम सुसानोओ है। मैं आमातेरासु महादेवी का छोटा भाई हूँ और अभी-अभी ताकामाहारा से उतरकर यहाँ आया हूँ।"

"क्षमा करें, मुझे आपके बारे में मालूम नहीं था। मैं अवश्य ही अपनी बेटी का हाथ आपके हाथ में सौंप दूँगा।" बूढ़े ने प्रसन्न होते हुए कहा।

सुसानोओ ने उस लड़की के हाथ को स्पर्श किया, तो वह कंघी में में बदल गई। सुसानोओ ने इस कंघी को अपने बालों में छिपा लिया। इसके बाद बूढ़े ने पहाड़ से लकड़ी और बाँस लाकर आठ दरवाज़ों वाला बाड़ा तैयार कर दिया और बुढ़िया ने चावल की शराब तैयार करके उससे आठ दरवाज़ों पर रखे आठों मटके भर दिए। उसके बाद वे यामाता की प्रतीक्षा करने लगे।

उन्हें अधिक राह नहीं देखनी पड़ी। कुछ देर बाद ही उन्होंने देखा कि आकाश अचानक लाल हो गया, पृथ्वी काँपने लगी और काले बादल छा गए। कुछ क्षण में ही एक विशाल और भयंकर साँप आठ सिर खड़े किए उसी ओर आता दिखाई दिया। सुसानोओ ने अपनी तलवार पकड़ ली और मौक़े की तलाश में लग गया। यामाता बाड़े के निकट पहुँचा तो उसे सुगन्धित शराब की गंध मिली। उसने अपने आठों सिर आठों मटकों में डाल दिए। कुछ ही क्षणों में वह सारी शराब पी

गया। उस पर शीघ्र ही नशा छा गया। वह बेहोश होकर वहीं पड़ गया। सुसानोओ ने तुरन्त अपनी तलवार से उस भयानक साँप पर वार पर वार करने लगा। इससे इतना ख़ून निकला कि हिइया नदी का पानी लाल हो गया।

जब यामाता मर गया तो सुसानोओ ने उसके टुकड़े करने शुरू किए। पहले उसने उसके एक-एक कर आठों सिर काट डाले। फिर धड़ टुकड़े-टुकड़े कर डाला और उसके बाद पूँछ काटने लगा। ठीक इसी समय आठवीं पूँछ में से एक आवाज़ आई। उसने उस पूँछ को चीरा तो उसमें से एक दिव्य तलवार निकली। सुसानोओ ने सोचा कि इसी तलवार ने उसकी रक्षा की है, इसलिए इसे अपने पास न रखकर किसी आदरणीय को भेंट देना चाहिए। उसने आमातेरासु का आह्वान करके वह तलवार उसे समर्पित की। वही तलवार आज तक जापान के राजसिंहासन के तीन चिह्नों में से एक के रूप में सुरक्षित है।

यामाता को मारने के बाद सुसानोओ ने बालों में छिपी कंघी निकाली। बालों से बाहर आते ही वह कंघी लड़की के रूप में बदल गई। प्राण बचने की खुशी में वह पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो गई थी। बूढ़े ने वचन के अनुसार अपनी पुत्री का विवाह सुसानोओ से कर दिया। सुसानोओ ने अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताते हुए जापान देश का शासन किया। उनकी अनेक सन्तानें हुईं, जिनमें से ओओकुनिनुसि का नाम बहुत प्रसिद्ध है।

सुसानोओ ने अपनी सुखी जीवन को एक कविता के रूप में चित्रित किया था। इसे जापानी साहित्य के इतिहास में प्रथम कविता कहा जाता है। सुसानोओ विद्या और वीरता के प्रतीक देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

❐

3

इनाबा का सफ़ेद ख़रगोश

यह बहुत ही पुरानी कथा है, जो जापान के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'कोजिकी' के उत्तरार्द्ध से ली गई है। 'ओओकुनिनुसि' एक दयालु, उदार तथा होशियार देवता है। एक छोटे-से ख़रगोश को बचाने के फलस्वरूप उसी ख़रगोश के आशीर्वाद से वह एक सुन्दरी 'याकामि' देवी के साथ विवाह करने में सफल हो जाता है। इसी कारण आज जापान में उन्हें सहिष्णुता, प्रेम, चिकित्सा तथा विवाह का देवता माना जाता है, जो दाइकोकुतेन (Daikokuten) का दूसरा रूप है।

जापान के 'इनाबा' राज्य (वर्तमान ज़िला सिमाने) के विशाल समुद्र तट पर बड़ा-सा थैला अपने कन्धे पर लटकाए एक राजकुमार जा रहा था। थैला भारी था। एक एक क़दम कठिनाई से उठा रहा था। थका हुआ था वह। उस राजकुमार का नाम था– 'ओओकुनिनुसि'। आज वह अपने अनेक बड़े भाइयों के साथ इजुमो राज्य से यहाँ आया था। बड़े भाई बदमाश थे। जो काम कठिन होता, उसे अपने सबसे छोटे भाई को करने के लिए देते थे। नौकरों की तरह उसे हर समय काम पर तैनात रहना पड़ता था।

इनाबा राज्य की 'याकामि' देवी बड़ी सुन्दर थी। ओओकुनिनुसि के बड़े भाई उसके साथ विवाह करने की उत्सुकता से इस राज्य में आये थे। कोमल स्वभाव वाला और बेहद परिश्रमी ओओकुनिनुसि अपने बड़े भाइयों का बड़ा ही आज्ञाकारी भाई था। बिना किसी झुँझलाहट के भारी बोझ भी चुपचाप उठाकर वह उनके पीछे आ रहा था। उसका सारा शरीर पसीने से नहाया था, क्योंकि रेतीले तट पर चलना बहुत कठिन काम था। यहीं पर कुछ क्षण आराम करने के लिए वह रुका ही था कि कहीं से रोने की आवाज़ सुनाई दी।

''कौन है?'' अचकचाकर उसने देखा तो रेत पर एक ख़रगोश रोता हुआ दिखा, जिसकी ख़ाल निकली हुई थी। राजकुमार ने पूछा, ''क्यों, क्या हुआ?'' ख़रगोश ने अपनी लाल-लाल आँखें

Indian ... 115990 17.11.04 SIMLA

उठाकर शरमाते हुए कहा, ''देखिए न कैसी हालत हो गई है, पर क़सूर मेरा है।''

ख़रगोश ने अपनी सारी राम-कहानी राजकुमार को सुना डाली। उसने बताया कि पहले वह 'ओकि' नामक छोटे टापू में रहता था, जो इनाबा राज्य के सागर तट के उस पार स्थित है। उसने वहाँ के जीवन से ऊबकर कहीं बाहर जाने का निर्णय लिया। क्योंकि इन छोटे टापुओं में खेलने की जगह कम थी। साथी और मौज़-मस्ती के साधन भी कम थे।

उसका अनुमान था कि समुद्र के उस पार कोई बहुत बड़ा देश होगा, जहाँ कई अद्‌भुत चीज़ें होंगी। कई अनोखे साथी होंगे। टापू के तट से समुद्र के उस पार देखकर ख़रगोश यही सोचता था   अगर मैं पक्षी होता तो उड़कर उस पार चला जाता। अगर मैं मछली होता तो तैरकर उस पार निकल जाता। पर वह तो ख़रगोश था– न उड़ सकता था, न तैर ही पाता था।

उसी समय किसी ने आवाज़ लगाई, ''ख़रगोश भाई उदास क्यों हो? क्या अकेले हो?''

पलटकर उसने देखा तो एक मगरमच्छ था। उसने कहा, ''नहीं, मेरे साथ बहुत-से साथी हैं। मैं उनसे अलग स्वतंत्र होकर यहाँ आया हूँ।''

"सच!"

"हाँ, सच! किन्तु तुम भी तो अकेले ही लगते हो।" यह कहते हुए एकाएक ख़रगोश के मन में एक विचार आया।

मगर ने उत्तर दिया, "मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथी समुद्र के अन्दर रहते हैं। कहो तो बुलाऊँ।"

ख़रगोश ने मन ही मन मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम और मैं एक होड़ क्यों न लगाएँ। देखें कि तुम्हारे और मेरे साथियों में से कौन जीतता है?"

मगर ने कहा, "अच्छा तो मैं अभी अपने साथियों को बुलाकर आता हूँ।" वह समुद्र के अन्दर चला गया। यह देखकर ख़रगोश मुस्कुराया। कुछ देर बाद मगर अपने साथी इकट्ठे कर लाया। सारे समुद्र में मगर ही मगर दिखाई दे रहे थे। ख़रगोश आश्चर्य से देख रहा, किन्तु शांत भाव से बोला, "किन्तु मैं कैसे गिनती करूँ? आप सब इनाबा राज्य के उस पार तक एक क़तार में खड़े हो जाएँ, तो मैं उस पर कूदते हुए एक-एक कर के गिन लूँ।"

सभी मगर एक क़तार में तैरने लगे। 'ओकि' टापू से 'इनाबा' राज्य के समुद्र तट तक एक मगर-पुल तैयार हो गया। "एक, दो, तीन...चार...पाँच..." ख़रगोश गिनती गिनता हुआ मगरों की पीठ पर कूदते-कूदते समुद्र तट के उस पार पहुँचने ही वाला था कि वह हँसकर बोला, "मूर्ख मगर, तुम अच्छी तरह से धोखे में फँस गये हो। साथियों की होड़ का तो एक बहाना था। मेरी इच्छा तो इस पार आने की थी।" यह सुनकर मगर को बहुत गुस्सा आया। सबसे पीछे तैरते हुए मगर ने ख़रगोश को पकड़ा और सबने मिलकर उसके कोमल बालों को उखाड़ दिया। नंगा ख़रगोश दर्द से चीख़ने लगा।

इधर ओओकुनिनुसि राजकुमार के सभी बड़े भाई गाना गाते हुए इस स्थान पर आ पहुँचे। ख़रगोश को देखकर निर्दयी भाई हँसी उड़ाते हुए बोले, "अरे देखो! नंगा ख़रगोश रो रहा है।"

उनमें से एक ने ख़रगोश से कहा "मैं तुमको एक बात बताऊँ– जिससे तुम्हारा कष्ट दूर हो। तुम नमक मिले पानी से नहाओ और खुली हवा में बैठे रहो। दर्द मिट जाएगा और बाल भी पहले जैसे ही हो जाएँगे।"

यह सुनकर ख़रगोश खुश हो गया और उसने वैसा ही किया। किन्तु हुआ उल्टा ही। दर्द बढ़ गया। यह देखकर सभी बदमाश भाई हँसते हुए चले गए। अब ख़रगोश पछतावे में डूबा था कि किसी को धोखा देना अच्छा नहीं है।

ख़रगोश की कहानी सुनकर राजकुमार के मन में दया आई। बोला, "अब तुमने प्रायश्चित्त

कर लिया। रोना-धोना मत! इस तरह की कोई चालाकी कभी न करना!''

''जी, हरगिज़ नहीं।''

''अच्छा, अब मैं ठीक उपाय बता देता हूँ। नदी के साफ़ पानी से अपने घाव धो लो और नदी तट पर उगी नरकट घास पर लेटे रहो। तुम अवश्य ठीक हो जाओगे।''

ख़रगोश ने वैसा ही किया, जैसा कि राजकुमार ने कहा था। उसका घाव ठीक हो गया। ख़रगोश राजकुमार को धन्यवाद देते हुए बोला, ''आप बहुत ही अच्छे आदमी हैं, इसलिए सुन्दरी 'याकामि' देवी अवश्य आप के साथ विवाह करेंगी।''

कोमल हृदय दुष्टात्मा को भी जीत जाता है। आज भी जापान के युवक-युवतियाँ अपने विवाह की संपन्नता की कामना करते हुए 'मात्सुए' स्थित 'इजुमो' महादेवालय में दर्शन करने आते हैं। यहीं ओओकुनिनुसि राजकुमार की आत्मा विराजमान है, ऐसा माना जाता है।

4

इक्कू की कहानियाँ

इक्कू (1394-1481) राज परिवार में पैदा हुआ एक बौद्ध भिक्षु था, जिसने छह वर्ष की उम्र में मन्दिर में रहकर बौद्ध-साधना की। उनके बचपन की कहानी 'इक्कू की हाज़िरजवाबी की कहानी' दुनिया की प्रसिद्ध हास्य-कहानी है, उसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं

जापान की पुरानी राजधानी क्योटो में एक बौद्ध मन्दिर स्थित है। उस में छोटी उम्र के पाँच शिष्य एक गुरु-भिक्षु के पास रहते थे। सबसे छोटे शिष्य का नाम था— 'इक्कू'। वह छोटा तो था, किन्तु था सबसे फुर्तीला, विनोदशील और बुद्धिमान। रात को एक दिन वह गुरुजी के कमरे के सामने से होकर जा रहा था कि उसे कमरे से कुछ आवाज़ सुनाई दी।

'यह क्या!' क्या कोई चोर या बिल्ली कुछ चाट रही है?' यह सोचकर उसने दरवाज़े की दरार से चुपचाप अंदर झाँका?

वह यह देखकर चकित रह गया कि गुरुजी इतनी देर तक जागकर कुछ चाट रहे थे। उनके सामने एक काला घड़ा था, जिसमें से वे कुछ निकाल-निकालकर खा रहे थे।

''अरे!'' इक्कू की आँखें जिज्ञासा से चमक उठी, ''शायद मधु होगा, वह तो मीठा-मीठा...''

वह तत्काल दौड़कर अपने साथियों के पास गया और उसने यह बात उनसे कह दी। एक साथी ने कहा, ''हमलोग भी अभी जाकर उसमें हिस्सेदार बनें। मधु तो असल में हम बच्चों के लिए ही है।''

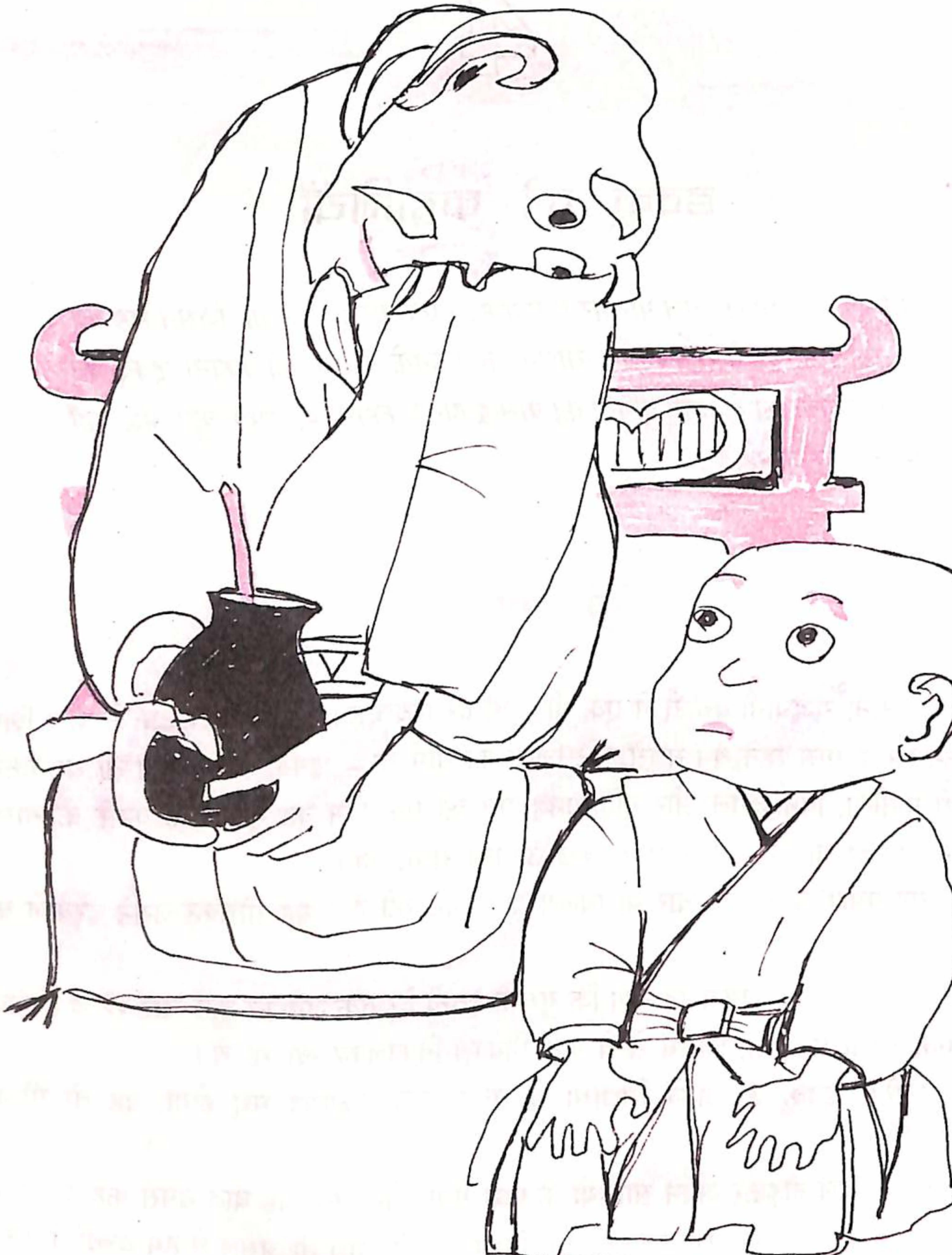

''ठीक है, चलो।''

पाँचों बच्चे मिलकर गुरुजी के कमरे में घुस गये। गुरुजी ने घबराकर घड़े को पीछे छिपा लिया। बोले, ''क्यों, क्या बात है? इतनी रात में कैसे आए हो?'' इक्कू ने धैर्यपूर्वक कहा, ''आप तो कहा करते थे कि अच्छी चीज़ को सब बाँटकर खाया करें।''

''ठीक कहते हो, फिर...'' गुरुजी ने उत्तर दिया।

''अगर आप इससे सहमत हैं, तो घड़े का मधु जो आप के पीछे रखा है, हमको भी दे दीजिए न।''

गुरुजी बड़े लज्जित हुए। फिर अपने को सँभालते हुए बोले, ''अरे, यह मधु...हा-हा-हा-हा यह मधु जैसा दीखता है, किन्तु यह है बड़े-बूढ़ों की दवाई, जिसका लक़वे की बीमारी पर अचूक असर होता है। पर यह इतनी ख़तरनाक दवाई है कि अगर बच्चा उसे खा जाए तो तुरंत मर जाएगा। मुझे दुःख है कि मैं इसे प्यारे बच्चों को नहीं दे सकता। समझे। अच्छा, तो अब जल्दी बिस्तरों में वापस जाकर सो जाओ।''

रात काफ़ी बीत गई थी। लाचार होकर सभी बच्चे चले गए। लेकिन अकेला इक्कू शंकाग्रस्त होकर सोच में पड़ा रहा।

दूसरे दिन गुरुजी सुबह ही बाहर चले गए। उनकी अनुपस्थिति में इक्कू ने उनके घड़े को उठा लिया और सारे साथियों से कहा, ''सुनो भाई, मज़ेदार चीज़ तो सबको बाँटकर खानी चाहिए, यह गुरुजी की शिक्षा है। आज मैं एक विशेष चीज़ तुम लोगों को खिलाऊँगा।''

एक बच्चे ने उत्सुकता से पूछा, ''मधु खिलाओगे? किधर है?''

''अरे जानते नहीं, इसी घड़े में भरकर रखा है।'' इक्कू ने जवाब दिया।

''लेकिन गुरुजी तो कह रहे थे कि यह दवाई है, जो बच्चों के लिए ज़हर है। यह असली मधु नहीं है।''

''नहीं, यह असली मधु है। ज़रा चाट के देखो तो सही।'' इक्कू ने कहा।

''नहीं, नहीं हम मरना नहीं चाहते।'' सभी बच्चे हिचकते रहे।

''ठीक है, मैं अकेला ही खाऊँगा।'' इक्कू यह कहकर सबके सामने मधु को चाटने लगा। वह खाता जा रहा था, किन्तु मरने का कोई भी लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था। यह देखकर दूसरे साथियों के मुँह में पानी आ गया और वे हाथ फैलाकर मधु माँगने लगे। इक्कू ने उन्हें दे दिया। देखते-देखते भरा घड़ा ख़ाली हो गया।

किन्तु सबके मन में यह डर समाया था कि गुरुजी को मालूम होने पर वे बहुत डाँटेंगे। पर इक्कू निश्चिंत था। बोला, ''चिन्ता न करो, इसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो।''

उसी दिन शाम को गुरुजी अपने मन्दिर में वापस आए। इक्कू ने मन्दिर के दरवाज़े पर बैठकर रोने का बहाना किया। यह देखकर गुरुजी ने पूछा, ''क्यों, क्या हो गया?''

''क्षमा कीजिए गुरुजी। मैंने आप की एक क़ीमती लाल प्लेट ग़लती से तोड़ दी।'' इक्कू ने सिसकते हुए कहा।

''ऐ! यह क्या कर दिया तुमने? वह तो मुझे प्राणों से भी ज़्यादा मूल्यवान थी।''

''क्षमा कीजिए गुरुजी। इसके प्रायश्चित्त के लिए मैंने आत्महत्या करने की सोची और घड़े के विष को खा लिया।''

''घड़े की दवा। खा...ली'' — गुरुजी का मुँह खुला का खुला रह गया। इक्कू आगे बोला, ''चखकर देखने लगा, तो दूसरे साथियों को लगा, मुझे अकेले नहीं मरने देना चाहिए। वे भी साथ में मरेंगे। यह सोचकर सबने उसे खाकर ख़त्म कर डाला। किन्तु फिर भी कोई नहीं मरा। अब लाचार होकर आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि आपके हाथ से मारे जाएँ।''

इक्कू की बातें सुनकर गुरुजी उन की शरारत समझ गए और अचानक हँस पड़े, बोले, ''मुझे माफ़ कर दो, इक्कू। 'झूठ मत बोलो', यह कहकर मैंने खुद झूठ बोला कि यह मधु नहीं, विषैली दवा है। तुम लोग कभी मरोगे नहीं, वह तो असली मधु था।''

इक्कू ने कहा, ''गुरुजी, मुझे भी क्षमा कीजिए। मैंने भी झूठ बोला था कि आपकी लाल प्लेट मैंने तोड़ दी। अब हम सब झूठ बोलना छोड़ दें गुरुजी।''

गुरु-शिष्य दोनों में समझौता हो गया। गुरुजी ने कहा, ''मैं तो सचमुच तुमसे हार गया।'' इतना कहकर गुरुजी ने हँसते हुए प्यार से इक्कू को गले लगा लिया।

एक दिन एक अनुयायी ने गुरुजी और इक्कू को अपने घर में विशेष भोजन के लिए निमन्त्रित किया। अगले दिन सुबह गुरु और शिष्य दोनों उसी घर की ओर चल दिए। उनके घर के सामने एक नदी थी, जिस पर एक पुल बना हुआ था। पुल के इस पार एक बड़ी-सी तख़्ती दिखाई पड़ी, जिस पर यह लिखा था कि इस पुल को पार करना मना है। जापानी भाषा में पुल को 'हासि'* कहते हैं,

1. HASHI —1. bridge (पुल), 2. chop-stick, 3. edge (किनारे) intonation (स्वर-शैली, के अनुसार इस शब्द का अर्थ अलग-अलग हो जाता है।

जिसका पर्याय 'किनारे' है। गुरुजी ने सोचा कि यदि पुल को पार न किया जाएगा, तो बहुत दूर तक चक्कर लगाकर जाना पड़ेगा, जिससे निश्चित समय पर नहीं पहुँच सकेंगे।

यह देखकर इक्कू बोला, "यह बोर्ड मालिक ने स्वयं लिखा है। पर कोई बात नहीं है, गुरुजी! हम पार कर ही जाएँगे।"

"अरे! तुम क्या कहते हो? उसमें तो लिखा है कि पार करना मना है।"

"नहीं गुरुजी! यह तो बताया गया है कि 'हासि' (किनारे) पर नहीं जा सकते, पर बीच में तो हम जा सकते हैं।"

"हाँ! ठीक ही कहा, तुमने।" गुरुजी इक्कू के पीछे-पीछे इस पुल को पार कर गये। यह सब देखकर मालिक इक्कू की बुद्धि पर हैरान हो गया।

मालिक के घर पर पूजा-पाठ ख़त्म हो गया। आज विशेष भोजन तैयार हुआ था। "आइए, भोजन ग्रहण कीजिए।" मालिक ने कहा। गुरुजी ने ढक्कन खोलकर सबसे पहले गरम-गरम सूप पीना आरम्भ किया। इक्कू भी वैसे ही ढक्कन खोलने वाला था कि मालिक ने उसे रोककर कहा, "इक्कू! ज़रा ठहरो। यह सूप ढक्कन न खोलकर पीने में मज़ा आता है। तुम ऐसे ही पीकर देखो तो सही।"

इस पर इक्कू कटोरा उठाकर बोला, "सूप तो ठंडा हो गया। कृपा करके इसे गरम सूप से बदल दीजिए। हाँ, बिना ढक्कन निकाले सूप बदलिएगा, ताकि सूप ठंडा न हो जाए।"

सूप परोसने वाला मालिक पसीने-पसीने हो गया।

[illegible]

इक्कू ने ख़ूब विद्याभ्यास तथा साधना की। पैंतीस वर्ष की उम्र में वह एक बड़े मंदिर का पुजारी बन गया। इक्कू बड़ा दयालु था। हमेशा दीन-दुखियों की सेवा में लगा रहता था। उनके लिए पैसे जुटाता, खाने-पीने की चीज़ें मँगवाता। वह भिखारियों का पक्का दोस्त बन गया था। लोग उसकी बड़ी इज़्ज़त किया करते थे।

एक दिन किसी गाँव से एक वृद्ध सज्जन इक्कू के पास आए और कहा कि वे अपने पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए पूजा-पाठ करना चाहते हैं। उसके लिए वे इक्कू को आमंत्रित करने आए थे।

इस पर इक्कू बोला, ''इतनी दूर से आपने मुझे बुलाने का क्यों कष्ट किया? आपके नज़दीक तो बहुत-से पुजारी रहते हैं। पूजा-पाठ करने में अन्तर ही क्या है?''

''ठीक है, हम यह सब जानते हैं। पर इस बार आपकी विशेष कृपा हम पर होनी चाहिए।''

''ठीक है, आप इतना आग्रह करते हैं, तो मैं इसे कैसे टाल सकता हूँ? अवश्य आऊँगा।'' फिर कुछ सोचते हुए वह बोला, ''अच्छा धन्यवाद, पर मेरी एक शर्त है। मेरे पास बहुत-से अनुयायी हैं। उन्हें साथ ले आने में कोई हर्ज़ तो नहीं।''

''नहीं-नहीं, जितने आप चाहें ला सकते हैं। मुझे कोई आपत्ति नहीं।''

''अच्छा ठीक है। उनको पेट भर भोजन दीजिए और थोड़ा-थोड़ा पैसा भी दान में।''

''जैसा आप कहें, वैसा हो जाएगा।''

वह ग्रामीण सज्जन खुशी-खुशी वापस अपने गाँव चल दिये। उनके जाने के बाद इक्कू जल्दी से भिखारियों की बस्ती में गया। उसने वहाँ सबको आमन्त्रित करते हुए कहा, ''परसों हम सबको एक गाँव में जाना है। एक भक्त ने भोजन के लिए बुलाया है। तुम सबको दक्षिणा भी मिलेगी।''

यह सुनकर सभी भिखारी खुशी से नाचने लगे।

दो दिन बाद इक्कू के मन्दिर के सामने भिखारियों की भीड़ इकट्ठी हो गई। इक्कू ने सबको समझाते हुए कहा, ''आज तुम लोगों को मेरे अनुयायियों के रूप में जाना है, इसलिए अच्छा व्यवहार करना, समझे! सब एक क़तार में खड़े हो जाओ।''

बूढ़े-बच्चे, स्त्री-पुरुष सब मिलकर 295 लोग हो गये थे। राजधानी क्योटो में सुबह बड़ा अजीब दृश्य था। एक महाभिक्षु के पीछे भिखारियों का लंबा जुलूस। अब तक किसी ने इतने भिखारियों को एक साथ नहीं देखा था। उनको इतना शिष्ट व्यवहार करते देख सभी शहर-निवासी आश्चर्यचकित हो रहे थे।

ग्रामीण सज्जन को भी स्वागत करते हुए आश्चर्य हुआ, ''वाह, वाह! यह क्या! मेरा ख़याल था कि आपके साथ चार-पाँच लोग होंगे।'' आख़िर इक्कू से सभी बातें सुनकर उसे बड़ी खुशी हुई। निमंत्रणदाता भी इस विशाल दान से धन्य हो गया।

क्योटो में एक क़बीले का बलवान सरदार रहता था। उसने इक्कू की बुद्धि परखने के लिए एक

दिन उसे अपने दरबार में बुलाया। सरदार ने एक पर्दा दिखाया, जिस पर एक ख़ूंख़ार शेर का चित्र अंकित था। उसने पूछा, ''इक्कू, इस पर्दे पर क्या लिखा है?''

''शेर।''

''ठीक है, यह शेर रोज़ बाहर आकर हमेशा गड़बड़ करता है। इसलिए आज तुम्हें यहाँ बुलाया है कि तुम अपनी सूझ-बूझ से इसे क़ैद कर लो, ताकि यह फिर कभी गड़बड़ न कर सके। मेरी आज्ञा है कि जल्दी ही इसे बाँधकर दिखाओ।''

यह सुनकर इक्कू बोला, ''मुझे एक रस्सी चाहिए।''

रस्सी आ गई। वह रस्सी लेकर आँगन में चला गया और ऊँची आवाज़ में बोला, ''सरदार! वह शेर आपके मकान में शोर मचाएगा और कमरे में तोड़-फोड़ करेगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि उसे यहीं बाँधा जाए। कृपया उस शेर को इस आँगन तक मँगवा दीजिए।''

यह सुनकर सरदार ने इक्कू की बुद्धि की प्रशंसा की और उसे बहुत-सा इनाम दिया।

❑

5

अंजू और जुसिओ

यह ऐतिहासिक कहानी श्री ओगाइ मोरि (1862-1922) की रचना है, जिन्होंने सेना में डॉक्टर होते हुए भी उपन्यास, नाटक, आलोचना तथा अनुवाद के साहित्यिक क्षेत्र में भी सृजनात्मक काम किया था। यह कहानी 'संश्योदायू' के नाम से 1915 में लिखी गई थी, जो जापान के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल की पाठ्य पुस्तकों में प्रकाशित भी की गई।

एक ऊबड़-खाबड़ रेतीले रास्ते पर चार अनोखे यात्री चले जा रहे थे। एक माँ, उसके दो बच्चे और एक दासी। बच्चों में एक लड़की थी जो लगभग चौदह वर्ष की थी और दूसरा उसका छोटा भाई था, जो क़रीब बारह वर्ष का रहा होगा। दासी थके-माँदे छोटे साथी को यह कहकर उत्साहित कर रही थी, "अब सराय नज़दीक आ गई है।" बड़ी बहन थकान से चूर होने के कारण घसीटकर चल रही थी, फिर भी वह अपना मन पक्का कर अपनी थकावट छिपाने की कोशिश कर रही थी। वह कभी-कभी अचानक प्रफुल्लता से पग बढ़ाने लगती थी, जैसे कोई विकट रास्ता काटता हुआ तीर्थयात्रा के लिए कहीं बहुत दूर जा रहा हो। किन्तु सिर पर छाता और हाथ में लाठी लिए वह बालक दयनीय लगता था। हालाँकि रेत और कंकड़ हेमंत ऋतु की धूप से सूखकर सख़्त हो गए थे, लेकिन समुद्र तट पर चलने में कोई कष्ट नहीं हो रहा था।

एक क़तार में खड़े घास-फूस के कई घर घने जंगलों से ढँके थे, जिन पर शाम को सूर्य की किरणें पड़ रही थीं। आगे खड़ी माँ ने किसी पेड़ की ओर इशारा करके कहा, "अरे! देखो कितना सुन्दर पेड़ है।"

बच्चों ने पेड़ की तरफ़ देखा, किन्तु कुछ भी न बोले। बहन छोटे भाई से बोली, "जल्दी चलो, पिता के पास जाना है।" इस पर भाई बोला, "वहाँ जाना कोई आसान काम नहीं लगता।"

माँ उसे समझाती हुई बोली, ''हाँ, बिलकुल। जितने पहाड़-जंगल अभी तक पार कर आए हैं, उनसे भी अधिक नदियाँ और समुद्र पार करने हैं। जितना हो सकेगा, उतना हर रोज़ चलेंगे।''

कुछ समय तक चारों, चुपचाप चलते रहे। एकाएक सामने एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी, जो एक ख़ाली बाल्टी अपने कन्धे पर रखे हुए थी। वह समुद्र तट से ख़ारा पानी लेने जा रही थी। दासी ने उससे पूछा, ''इधर कोई सराय है क्या?''

वह औरत एक क्षण रुककर चारों को देखती हुई बोली, ''बहुत अफ़सोस है कि यात्रियों के लिए इस इलाक़े में एक भी सराय नहीं है। दुर्भाग्य से अंधेरा भी हो रहा है और मुश्किलें भी बढ़ रहीं हैं।''

दासी बोली, ''यह सच है क्या? इतनी ख़राब स्थिति क्यों?'' वह औरत रास्ते की ओर इशारा करती हुई बोली, ''वह देखो, वहाँ पुल के पास विज्ञापन लगा हुआ मिलेगा। मेरे ख़याल से उसमें यह सब लिखा हुआ है। आजकल बदमाश लोग, जो गुलामों का व्यापार करते हैं, इस इलाक़े में बहुत फैल गये हैं। इसलिए यहाँ के ज़िलाधीश यात्रियों को आश्रय देनेवालों को सज़ा देते हैं। इसी डर से कोई किसी को जगह नहीं देता है।''

''यह तो बहुत तकलीफ़ की बात है। हमारे पास तो बच्चा भी है और अब इससे आगे नहीं चला जा सकेगा। क्या आपके पास कोई उपाय है?''

''हाँ, समुद्र-तट तक पहुँचते-पहुँचते आप लोगों को रात हो जाएगी। इसलिए कहीं अच्छी जगह देखकर यहाँ पड़ाव डालने के सिवा और कोई चारा नहीं। मेरे ख़याल से उधर पुल के नीचे सो रहें तो ठीक रहेगा। मैं यहाँ नज़दीक ही एक जंगल में रहती हूँ रात को कुछ पुआल या फूस लेकर आऊँगी।''

माँ कुछ दूर खड़ी होकर यह सब सुन रही थी। वह आगे जाकर बोली, ''आप जैसी महिला मिलना तो हमारा सौभाग्य है। कृपा करके घास-फूस आदि अवश्य ला दीजिएगा, जिससे कम-से-कम बच्चे ठंड से बच जाएँ।'' वह औरत वचन देकर जंगल की ओर लौट गई। वे चारों पुल की ओर जल्दी-जल्दी चलने लगे।

पुल के पास पहुँचकर वे लोग कुछ खाने-पीने की चीज़ें निकालने ही वाले थे कि कहीं से एक आदमी सामने आया। वह देखने में तो असभ्य लगता था, पर मीठे शब्दों में समझा-बुझाकर चारों यात्रियों को अपने घर ले गया। वहाँ उसने गरमागरम कंजी (चावल का दलिया) खिलाई। माँ ने थके-माँदे बच्चों को पहले सुलाने के बाद उस आदमी से बात की। माँ ने उस आदमी को बताया कि उसका पति एक दिन 'क्यूश्यू' जाकर अचानक अदृश्य हो गया। वह अपने दो बच्चों

को लेकर पति की खोज में निकली है। साथ ही, वह अपनी दासी भी लाई है, जो एक अनाथ बच्ची थी और जिसका लालन-पालन वह अपनी बच्ची के जन्म से ही करती आई थी। सारी कहानी सुनने के बाद उस आदमी ने मीठे शब्दों में कहा कि क्यूश्यू तक पहुँचने के लिए ज़मीन का रास्ता बड़ा ख़तरनाक होगा, पानी का रास्ता ही अच्छा रहेगा। दूसरे दिन सुबह वे चारों उस आदमी के साथ नौका में बैठ कर समुद्र-मार्ग से रवाना हुए।

असल में उस आदमी का काम लोगों का अपहरण करके गुलामों के व्यापारियों के हाथ बेच डालना था। उसने धोखा देकर अपने एक साथी को माँ और दासी तथा दूसरे साथी को दो बच्चे बेच डाले। दोनों ख़रीदारों ने उन्हें अपनी-अपनी नौका में बिठाकर उस आदमी को पैसा दे दिया। इसके बाद एक नौका उत्तर की ओर, दूसरी नौका दक्षिण की ओर चल पड़ी। वह को समझने में देर न लगी कि वह धोखा खा चुकी है। पर अब वह क्या करे? दोनों नौकाएँ देखते ही देखते काफ़ी दूर चली गईं।

इधर माँ नौका की ऊपरी पट्टी पर हाथ लगाकर पागलों की तरह मचलती रही। वह दूर जा रही दूसरी नाव में अपने बच्चों को ओझल होते देखकर करुण स्वर में रोती-धोती चिल्लाई, ‘‘मैं अब क्या कंर सकती हूँ, विदा मेरे बच्चो! अंजू, तुम अपने ताबीज मंगलकारी-बोधिसत्व की पूजा करना और जुसिओ, तुम पिता की दी हुई ताबीज रूपी तलवार को सावधानी से रखना। चाहे जो हो जाए, दोनों कभी अलग न होना।’’

दूसरी ओर बच्चे ‘‘माँ, माँ...’’ चिल्लाते रहे। दोनों नौकाएँ धीरे-धीरे दूर होती गईं और पीछे दोनों बच्चों का हैरानी से खुला मुँह दिखाई दे रहा था, मानों चूज़ा अपने चारे का इंतज़ार कर रहा हो। लेकिन वह आवाज़ अब सुनाई नहीं दे रही थी। उसी क्षण दासी ने अत्यंत दुःखी होकर समुद्र में कूदकर आत्महत्या कर ली। माँ भी उसके पीछे जल में कूदने की कोशिश करने लगी। लेकिन उस बदमाश ने उसके बालों को पकड़कर खींच लिया और रस्से से बाँधकर नाव की तली में पटक दिया।

इधर भाई-बहन की नौका दो-तीन बंदरगाहों से होकर आगे बढ़ती गई, लेकिन इन कमउम्र बच्चों को कौन ख़रीदता! आख़िर ‘संश्योदायू’ नामक एक अमीर व्यापारी को ही वे सौंपे गए, जहाँ कई प्रकार के कष्टकर और कठोर काम अनेक दास-दासियों से कराए जाते थे।

यहाँ इन दोनों से ख़ूब कठिन काम बलपूर्वक कराए जाने लगे। तब दोनों ने मन में यह दृढ़ निश्चय किया कि डटे रहकर जीने के सिवा और कोई उपाय नहीं। इन असहायों के साथ हाथ

बँटानेवाला एक दयालु आदमी भी था। बड़ी बहन नमक बनाने के लिए समुद्र तट से नमक पानी लाया करती और छोटा भाई जंगल में अपनी बहन को याद करता। जब सूर्यास्त होने पर दोनों अपने पड़ाव पर वापस आते, तब दोनों गले मिलकर अपने माता-पिता की याद करते हुए रोने लगते।

मालिक संश्योदायू के यहाँ 'जिरो' और 'साबुरो' नामक दो भाई थे। जिरो बड़ा था और साबुरो छोटा। बड़ा भाई दयालु था, जबकि छोटा भाई निर्दयी तथा बदमाश। जिरो यह कहकर दोनों बच्चों को ढाढ़स बँधाता रहता था कि यदि तुम अपने माता-पिता से मिलना चाहते हो, तो जब तक बड़े न हो जाओ, तब तक इंतज़ार करो।

साबुरो ने जब दोनों भाई-बहन को वहाँ से भागने की बात करते हुए सुना, तब यह कह कर दोनों को धमका दिया कि अगर भागोगे, तो लाल-लाल गर्म लोहे से चेहरे को दाग़ दिया जाएगा। उसी रात दोनों भाई-बहन ने एक जैसे स्वप्न देखे।

स्वप्न में दोनों भाई-बहन संश्योदायू के सामने खींच कर लाये गये और साबुरो ने उनके चेहरे पर गर्म-गर्म लोहा लगाया। किंतु आश्चर्य की बात थी कि ईश्वर की कृपा से चोट ठीक हो गई। इससे भी आश्चर्यजनक बात यह थी कि थैली से निकले हुए क्षतिगर्भ-बोधिसत्व की मूर्ति के चेहरे पर छेनी से काटा हुआ क्रॉस का चिह्न स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

जब से यह भयंकर स्वप्न देखा, तब से अंजू की हालत में बड़ा परिवर्तन आने लगा। उनके चेहरे पर एक प्रकार का तनाव आ गया। उसकी आँखें बहुत दूर तक ताकने लगीं और वह एकदम चुप थी। जब सूर्यास्त होने पर वह समुद्र-तट से लौटती, तब पहले की तरह जंगल से काम करके आए हुए भाई को न तो प्यार करती। भाई ने इस बात से चिन्तित होकर पूछा, "बहन, क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, ठीक है।" यह कहती हुई वह झूठमूठ हँसती रही। बस, वह इतना ही बदली थी कि बात कहने में कोई ग़लती नहीं करती थी। काम करने में भी पहले की तरह डटी रही। लेकिन जुसिओ को बहन की दशा देखकर मन-ही-मन बहुत दुःख होता था। वह सोचता — 'पहले तो दोनों एक-दूसरे को दिलासा दिया करते थे, पर अब बहन में इस तरह का बदलाव क्यों आया?' दोनों भाई-बहन की मनोदशा पहले से अधिक बुरी हो गई।

जाड़ा आ गया था। बर्फ़ कभी गिरती, तो कभी थम जाती। दास-दासी सभी बाहरी काम-काज बन्द कर के घर के अंदर का काम करने लगे थे। अंजु सूत कातती, तो जुसिओ पुआल के भूसे से रस्सी बनाता। रस्सी बनाना तो कठिन काम नहीं था, पर सूत कातना बड़ा मुश्किल था। कुछ समय बाद ही वसंत आ गया। फिर बाहर का काम शुरू होनेवाला है।

एक दिन जिरो निरीक्षण करते हुए दासियों की कुटी में आ पहुँचा, ''क्यों फिर कल से काम पर जाओगे क्या?''

अंजू सूत कातती हुई अपना हाथ सेंककर जिरो से बोली, ''मेरी प्रार्थना है कि मुझे अपने छोटे भाई के साथ जंगल भेजा जाए, क्योंकि मैं उसके साथ काम करना चाहती हूँ।'' उसका पीला चेहरा कुछ लाल हो गया था और आँखें चमक रही थीं। जुसिओ अपनी बहन की ओर एकटक देखता रहा। जिरो चुपचाप अंजू की हालत देखता रहा। अंजू बार-बार अपनी बात दोहराती रही।

कुछ क्षणों के बाद जिरो ने कहा, ''हमारे घर में दास-दासियों की व्यवस्था आदि का काम पिताजी ही करते हैं, लेकिन मैं तुम्हारी बात ज़रूर मनवाने की कोशिश करूँगा। निश्चिन्त रहो। यह अच्छा हुआ कि तुम दोनों ने स्वस्थ रहकर इस जाड़े को पार कर लिया।'' यह कह कर जिरो झोंपड़ी से बाहर निकल गया।

तब जुसिओ अपनी बड़ी बहन से बोला, ''क्यों, क्या हुआ? तुम मेरे साथ जंगल जाओगी, यह तो बड़ी खुशी की बात है, पर अचानक तुमने बग़ैर किसी से सलाह-मशविरा किये ऐसी प्रार्थना क्यों की?''

बहन का चेहरा खुशी से चमक रहा था। वह बोली, ''तुम्हारा इस तरह से सोचना स्वाभाविक है। जब तक जिरो से मुलाक़ात नहीं हुई थी, तब तक मैंने ऐसी प्रार्थना करने की बात सोची भी नहीं थी।'' जुसिओ अपनी बहन के चेहरे को ऐसे देखता रहा, जैसे किसी अनोखी वस्तु को देख रहा हो।

कुछ देर बाद एक दास टोकरी और हँसिया लेकर आया और बोला, ''तुमको जंगल जाना है, लो यह सामान। उसके बदले में पहले वाला सामान बाल्टी और कड़छी ले जाता हूँ।'' अंजू ने पहले का सामान वापस कर दिया। दास फिर बोला, ''हाँ, एक काम और है। तुम्हें जंगल में जाने की अनुमति जिरो ने अपने पिता से दिलवाई, किन्तु साबुरो का कहना था कि तुम्हारे बाल काटकर पुरुष वेश में ही जंगल भेजा जा सकता है। उसके पिता इस बात पर राज़ी हो गये और मुझे तुम्हारे बाल काटकर ले जाने का हुक्म दिया गया है।''

उसकी यह बात जुसिओ की छाती में चुभ गई। वह आँखों में आँसू भरकर बहन की ओर देखता रहा। सहसा अंजू के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई, ''सच बात है। अगर लकड़ी-घास काटने जंगल जाना हो तो पुरुष बनना ही चाहिए। इसी हँसिये से मेरे बाल काट दो।'' अंजू ने दास के सामने अपना सिर झुका दिया और उसके चमकीले और लंबे बाल तेज़ हँसिये से एक क्षण में ही अलग हो गये।

दूसरे दिन सुबह दोनों बच्चे कन्धे पर टोकरी और हाथ में हँसिया लेकर साथ-साथ झोंपड़ी से निकले। जब से वे इस मालिक के पास बेचे गये थे, तब से बाहर साथ-साथ चलने का उनका यह पहला मौक़ा था। जुसिओ अपनी बहन की मनोदशा की कल्पना नहीं कर पा रहा था। उदासी और अकेलेपन से उसका मन भर आया। कब से वह बहन से उसकी परेशानी का कारण पूछ रहा था, पर वह किसी भी बात का स्पष्ट उत्तर नहीं दे रही थी, केवल भाई का हाथ ज़ोर से पकड़े थी। लगता था, जैसे मन-ही-मन वह किसी बात पर विचार कर रही हो?

जंगल के पास ही एक तालाब था। रास्ते के किनारे हरी-हरी कोमल घास के वीच में नन्हें फूल खिले हुए थे। अंजू फूलों की तरफ़ इशारा करती हुई बोली, "देखो, अब वसंत आ गया।" जुसिओ ने धीरे से कहा, "हाँ।"

बहन अपने मन में कोई रहस्य को छिपा रही थी और भाई उदास था। पिछले वर्ष जहाँ पर जुसिओ लकड़ी काटता था, वहाँ पर पहुँचकर वह रुक गया और बोला, "बहन, हमें यहाँ लकड़ी काटनी है।" बहन ने उत्तर दिया, "ठीक है, पर और भी ऊँची जगह पर चलकर काटेंगे।"

अंजू आगे-आगे गई और जुसिओ पीछे-पीछे। जुसिओ मन-ही-मन कुछ शंकित-सा था। कुछ ही समय बाद वे दोनों काफ़ी ऊँची चोटी पर पहुँच गये। खड़ी हो कर अंजू दक्षिण की ओर एकटक देखने लगी। उसकी नज़र एक घने जंगल के बीच में स्थित एक ऊँचे स्तूप पर जाकर टिक गई। वह भाई को सम्बोधित करती हुई बोली, "बहुत दिनों से मैं सोच-विचार में डूबी थी और तुमसे कुछ भी बताने से इनकार किया था जो तुम्हें अजीब लगा होगा। पर आज मैं सव बताती हूँ। लकड़ी काटने की बात अब छोड़ दो और मेरी बात ध्यान से सुनो।" उसने तर्जनी से संकेत करते हुए कहा–

"देखो, वह जो नीचे दिखाई दे रहा है न, एक रास्ता। हालाँकि उस रास्ते से माँ-बाप के पास पहुँचना कठिन है, पर राजधानी तक अवश्य पहुँचा जा सकता है। जब से हमने अपनी माँ के साथ अपनी पिता की खोज में घर छोड़ा, तब से केवल ख़तरनाक आदमियों से ही भेंट होती आई है। पर भाग्य से भले आदमी से भी ज़रूर मुलाक़ात होगी। तुम निडर होकर इसी समय इस इलाक़े से निकलकर राजधानी की ओर भाग जाओ। ईश्वर की कृपा से यदि भला आदमी मिल गया, तो क्यूश्यू गये हुए पिताजी का पता भी लग जाएगा और माँ को लेने के लिए 'सादो' टापू भी जा सकते हो। टोकरी और हँसिये को यहाँ रख दो।"

जुसिओ चुपचाप आँसू बहाता हुआ सब कुछ सुनता रहा। वह बोला, "किन्तु तुम्हारा क्या

होगा?'' बहन करुण स्वर में बोली, ''मेरे बारे में चिन्ता मत करो। जो भी तुम्हें अकेले करना है, उसे यह समझकर करो कि मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। पिता जी से भी मिलना है और माँ को भी 'सादो' टापू से लाना है। उसके बाद तुम मुझे छुड़ाने आ सकते हो।''

जुसिओ भरे गले से बोला, ''मेरे ग़ायब होने पर तुम्हें बड़ा कष्ट भोगना पड़ेगा।'' जुसिओ मन ही मन उस दुःस्वप्न को याद करके सिहर गया, जिसमें उन्हें गरम-गरम लोहे से दाग़ा गया था।

''हाँ, वे लोग मुझे अवश्य कष्ट देंगे, पर मैं सब कुछ सह लूँगी। पैसे से ख़रीदी हुई दासी को वे लोग जान से मारेंगे नहीं। तुम्हारे न होने से शायद मुझे दुगुना काम करना पड़ेगा। मुझसे जितना हो सकेगा, उतनी लकड़ी वहाँ काटूँगी, जहाँ तुमने मुझे बताया था। ठीक है, मैं तुमको वहाँ तक पहुँचा आती हूँ।'' यह कहकर अंजू आगे-आगे उतरने लगी।

जुसिओ ख़ुद कोई फ़ैसला नहीं कर पा रहा था। वह भावशून्य होकर बहन के पीछे-पीछे उतरने लगा। अंजू अधिक होशियार थी, इसलिए छोटा भाई उसकी सारी बातों को मानता था। अंजू ने अपनी ताबीज़ निकाली और छोटे भाई को देकर बोली, ''यह बहुत महत्त्वपूर्ण ताबीज़ है। इसे तब तक अपने पास रखना, जब तक मैं तुमसे फिर न मिलूँ। इस क्षतिगर्भ-बोधिसत्व को मुझे समझकर अपनी तलवार के साथ सावधानी से रखना।''

जुसिओ सूनी-सूनी आँखों से बहन को देखता हुआ बोला, ''किन्तु तुम्हारे पास यह ताबीज़ न होने से तुम्हारा क्या होगा?''

नहीं, कुछ नहीं होनेवाला। तुम्हें ही इसे रखना चाहिए, क्योंकि यह तुम्हारे लिए मुझसे भी अधिक ख़तरनाक घड़ी है। रात को तुम्हारे वापस न आने से वे लोग तुम्हें ढूँढ़ने ज़रूर आएँगे। तुम जितनी तेज़ी से हो सके, भाग जाओ! नदी पार करने पर एक बौद्ध मंदिर मिलेगा, जहाँ तुम्हें शरण मिल जाएगी। जब पीछा करनेवाले चले जाएँ, तब तुम आगे बढ़ना।'' अंजू बोली।

''किन्तु मंदिर के पुजारी मुझे शरण देंगे कि नहीं।'' जुसिओ बोला।

''हाँ, यह तो तुम्हारे भाग्य की बात है। अगर भाग्य साथ देगा, तो पुजारी तुम्हें अवश्य छिपायेंगे। चलो, पहाड़ के नीचे तक मैं तुम्हें छोड़ दूँ। जल्दी आओ।'' अंजू बोली

दोनों जल्दी ही नीचे उतरने लगे। दोनों की चाल तेज़ थी। ऐसा लगता था, जैसे बहन का उत्साह छोटे भाई को प्रेरित कर रहा हो। दोनों एक झरने के पास पहुँचे। बहन अपने हाथ में झरने का पानी भरकर बोली, ''लो, यह तुम्हारे प्रस्थान के लिए आशीर्वाद है।'' और अंजुरी से एक घूँट पानी पीकर बाक़ी अपने भाई को पिला दिया।

विदा होते समय दोनों की आँखें भर आईं। जुसिओ थोड़ी देर बाद पगडंडी से होकर मुख्य मार्ग पर आ पहुँचा और नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ता गया। अंजू झरने के तट पर खड़ी हो कर तब तक देखती रही, जब तक चीड़ के पेड़ों के बीच भाई की छाया ओझल न हो गई। सूर्य अभी बीच आकाश में जानेवाला था, किन्तु अंजू ने अभी तक कुछ भी लकड़ी नहीं काटी थी। सौभाग्य से, उस दिन किसी की नज़र नहीं पड़ी और इस तरह खड़े-खड़े बेकार समय काटने पर भी कोई डाँटनेवाला नहीं था। बाद में उसी ढलान पर अंजू को एक छोटी-सी चप्पल पड़ी मिली, जो जुसिओ की ही थी।

उधर मन्दिर में भागकर घुसनेवाले जुसिओ को पुजारी ने शरण दी और संश्योदायू के पीछा करनेवालों के हाथ से बचाकर उसे सुरक्षित राजधानी तक पहुँचाने में सफल हो गया। वहाँ जुसिओ ईश्वर कृपा से सम्राट के मुख्य सलाहकार का संरक्षण पाकर 'मासामिचि' नाम से विख्यात हुआ और ज़िला 'तंगो' का सरदार बन गया। मासामिचि ने अपने शासनकाल में प्रथम बार दास-व्यापार को बंद करवाया, जिससे संश्योदायू को अपने दास-दासियों को मुक्त कर वेतन देने की व्यवस्था करनी पड़ी।

अंजू ने यातनाएँ सहन करते हुए कुछ समय बाद तालाब में कूदकर आत्महत्या कर ली। मासामिचि ने अपनी बड़ी बहन की आत्मा की शान्ति के लिए धूमधाम से पूजा करवाई और जहाँ उसने आत्महत्या की थी, उसी तालाब के तट पर एक मंदिर बनवाया। यह सब करने के बाद मासामिचि, गुप्त रूप से साधारण आदमी के वेश में 'सादो' टापू तक गया, जहाँ उसकी माँ के जीवित होने का अनुमान था। उस ने 'सादो' की राजधानी जाकर वहाँ के मुख्य अधिकारी की मदद से सभी जगह माँ को ढुँढ़वाया, किन्तु उसका कुछ पता न चला।

एक दिन मासामिचि सोच में डूबा हुआ अकेला सराय से निकला और शहर के भीतर घूमने लगा। घूमते-घूमते बस्ती से थोड़ी दूर खेत के रास्ते पर आ गया। आकाश साफ़ था और लाल-लाल सूरज चमक रहा था। उसने मन-ही-मन सोचा, 'माँ का पता क्यों नहीं लग रहा है? ऐसा तो नहीं कि जाँच का काम अधिकारियों को सौंप कर ख़ुद खोज में न निकलने के कारण ईश्वर मुझ पर नाराज़ हो गया।'

एकाएक उसने देखा कि सामने एक किसान का घर है। घर के दक्षिण में लीपा हुआ आँगन है, जहाँ चटाई बिछी हुई थी। इस चटाई के ऊपर बाजरे की नई फ़सल सुखाने के लिए रखी थी। बीच में फटे-पुराने कपड़े पहने एक बुढ़िया बैठी थी। उसके हाथ में बाँस का लंबा डंडा था, जिससे वह चिड़ियों को भगा रही थी।

मासामिचि उस बुढ़िया की ओर आकर्षित हुआ और कुछ क्षण रुककर देखने लगा। बुढ़िया के बाल अस्त-व्यस्त थे और वह अन्धी थी। मासामिचि को बहुत दया आई। बुढ़िया कोई गाना गुनगुना रही थी :

याद आती है अंजू की,
याद आती है जुसिओ की।
अगर पक्षी में है जीवन,
भाग ले जल्दी यहाँ से।

बुढ़िया की गुनगुनाहट धीरे-धीरे मासामिचि के कान में घुलने लगी। इस गान के साथ ही उसके शरीर में सिहरन होने लगी और आँखों में आँसू आ गये। एकाएक वह बाड़े के अंदर कूदा और पैर से अनाज को रौंदता हुआ बुढ़िया के सामने गिर पड़ा। उसके दाहिने हाथ में तावीज़ थी। गिरते समय उसने तावीज़ माथे से दबा ली थी। बुढ़िया ने समझा कि कोई पक्षी नहीं, बल्कि बाजरा खाने कोई बड़ा जानवर आया है। बुढ़िया अपना गाना बंद करके अन्धी आँखों से एकटक सामने ताकती रही।

उसी क्षण जैसे सूखी सीप पानी पड़ने पर धीरे-धीरे खुलने लगती है, वैसे ही बुढ़िया की आँखें धीरे-धीरे तरल होने लगी और आख़िरकार उसकी आँखें खुल गईं।

"जुसिओ!" तभी बुढ़िया चिल्लाई और दोनों ने एक-दूसरे को छाती से लगा लिया।

❐

6

निर्दयी राजा और सयानी बुढ़िया

यह कहानी 'उबासुते याया' (अर्थात् बूढ़ों को भगाने का पहाड़) नाम से 'कोंजाकु मोनोगातारी' अर्थात् वर्तमान और भूतकाल के कहानी-संग्रह में वर्णित है, जो हेइआं-युग के उत्तर काल में रची गई। इससे मिलती-जुलती कहानी कोरिया और भारत में भी पाई जाती है, जहाँ मातृ-भक्ति या माँ और बच्चों के बीच की प्रेम-भावना का वर्णन है।

बहुत पुरानी बात है। जापान के 'सिनानो' नामक राज्य में एक बहुत घमंडी राजा रहता था। एक दिन उसने अपने राज्य के कोने-कोने में घोषणा करवा दी कि सत्तर वर्ष से अधिक उम्र के सभी निकम्मे बूढ़ों को उनके घर से निकाल दिया जाए। बड़ी कठोर घोषणा थी। राज्य के गाँवों और शहरों में बड़ा शोर मच गया— "कितना निर्दयी राजा है, यह! बूढ़े माता-पिता को हम कैसे छोड़ सकते हैं ?"

लेकिन यदि जनता इस आज्ञा का पालन नहीं करती है, तो पता नहीं कितनी कठोर सज़ा दी जाएगी। राजाज्ञा से कोई छुटकारा न देख लोग रोते-रोते अपने-अपने बूढ़े माँ-बाप को कन्धे पर बिठाकर जंगल की ओर चलने लगे। पानी और फलों से भरपूर शान्त, निर्जन स्थान में इन बूढ़ों को छोड़ते हुए बोले, "क्षमा करें, यह पानी पीकर, कन्द-मूल या जंगली फल खाकर किसी तरह बाक़ी जीवन बिता लीजिए। हम एक दिन ज़रूर आपको लेने आएँगे।" यह कहकर वे अपने-अपने घरों को लौट पड़े।

'गैंसुके' नामक एक ग्रामवासी भी अपनी माँ को पीठ पर लिए जंगल की ओर जा रहा था। रास्ते में उसकी माँ अपने हाथ फैलाकर पेड़ की टहनियों को पकड़ती-तोड़ती चली जा रही थी। यह देखकर गेंसुके ने अनुमान लगाया कि माँ जंगल से वापस आने के लिए रास्ते की निशानी छोड़ती जा रही है। इन्हीं विचारों में डूबता-उतरता वह अपनी माँ को जंगल में छोड़कर जाने ही वाला था कि माँ बोली, "गेंसुके, तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। तुम कहीं रास्ता न भूल जाओ, इसलिए मैं तुम्हारे लिए रास्ते में टहनियाँ गिराते-गिराते आई हूँ।"

यह सुनकर गेंसुके रोने लगा, ''हाय अम्मा! आप इतनी महान हैं, मैं आपका त्याग कैसे कर सकता हूँ?'' अपने कन्धे से उतारी हुई माँ को फिर से कन्धे पर रख हवा की तरह भागकर वह अपने घर वापस आया। किन्तु राजा की आज्ञा के विरुद्ध माँ को घर पर रखना उसके लिए ख़तरे से ख़ाली नहीं था। इसलिए उसने बड़े यत्न से माँ को छिपाया और दिन-रात एक करके अपने घर के नीचे एक गुफा तैयार की। उस गुफा में उसने अपनी माँ को छिपाकर रखा।

दिन बीतते गये। वसंत ऋतु आई। सारे देश में उमंग का वातावरण छा गया। किन्तु ग्रामवासी उदास थे, क्योंकि जंगल में छोड़ आये माँ-बाप की चिन्ता के कारण किसी का भी काम में मन नहीं

लग रहा था। उन्हें न रात को नींद आई, न दिन को चैन। वे खेती करना तक भूल गये। फिर लगान में चावल कहाँ से देते। सारी बातें राजा के कानों तक पहुँची। इस पर वह घमंडी राजा गुस्से से पागल हो उठा। उसने तुरंत एक आदेश जारी किया कि जो लोग अपने बूढ़ों को वापस लाना चाहते हैं, वे पहले दरबार में राख की रस्सी बनाकर पेश करें।

यह बड़ी टेढ़ी शर्त थी। भला राख से कैसे रस्सी बनाई जा सकती थी? गेंसुके रोते हुए अपने आप से बातें करने लगा। घर के नीचे गुफा में छिपी माँ यह सब सुन रही थी। उसने उसे बुलाकर शान्त-भाव से कहा, "यह तो बहुत आसान है। रस्सी को नमकीन पानी में भिगोकर सुखा लो, फिर उसे लोहे की प्लेट पर रखकर आग में तपाओ। बस, कुछ ही देर में राख की रस्सी बन जाएगी।"

माँ के बताये तरीक़े से राख की रस्सी तैयार हो गई। गेंसुके ने ख़ुशी-ख़ुशी सारे गाँव में यह ख़बर फैला दी। अब तो सारे गाँववाले गेंसुके के घर पर जमा हो गये और उसके साथ राजमहल की ओर चल पड़े।

रस्सी देखकर राजा चकित रह गया, किन्तु दुष्ट और अभिमानी राजा इतनी आसानी से अपनी हार माननेवाला न था। उसने कुछ ऐसा मुँह बनाया कि मानों कुछ देखा न हो और बोला, "रस्सी तो तुमने बना ली, लेकिन अभी एक शर्त बाक़ी है।"

"वह क्या?" गेंसुके सहित सारे लोग उत्सुकता से बोल उठे। जवाब में राजा ने कुछ दूर खड़े एक जैसी शक्ल और समान रंग वाले दो घोड़ों की ओर संकेत करते हुए कहा, "वह एक जैसे दो घोड़े देख रहे हो। जाओ, उन्हें ले जाओ और पहचानकर बताओ कि इनमें कौन घोड़ा माँ है और कौन घोड़ा बच्चा। यह मेरी दूसरी शर्त और सवाल है।"

गाँववाले दोनों घोड़ों को लेकर गाँव लौट आए और उन्हें चारों तरफ़ से घेरकर आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ ध्यानपूर्वक देखने लगे। किन्तु बहुत देखने-भालने पर भी वे यह फ़ैसला नहीं कर पाये कि कौन-सा घोड़ा माँ है और कौन-सा बच्चा। बात फिर गेंसुके की माँ तक पहुँची। उसने गेंसुके को प्यार से झिड़कते हुए कहा, "इसमें कौन-सी मुश्किल बात है। ऐसा करो कि दोनों घोड़ों को आमने-सामने खड़ा कर उनके बीच में कुछ गाजर रख दो। जो भी घोड़ा इन गाजरों को छीन-छपट कर खाए, वह बच्चा होगा। जब तक बच्चा पूरा खा नहीं लेगा, माँ शान्ति से पहरा देती रहेगी, क्योंकि चाहे घोड़ा हो या मनुष्य, माँ की ममता सबमें बराबर होती है।"

गेंसुके फिर अपने लोगों में लौट आया और जैसा उसकी माँ ने कहा था, वैसा लोगों से

करने के लिए कहा। लोगों को दोनों घोड़ों का अन्तर पता चल गया और वे फिर राजा के पास जा पहुँचे। उन्होंने राजा को बता दिया कि कौन-सा घोड़ा माँ है और कौन-सा बच्चा।

राजा ने उनकी बुद्धि की प्रशंसा की, किन्तु वह इतनी आसानी से अपनी बात लौटाने को तैयार नहीं था। उसने लोगों को एक पत्थर की गेंद देते हुए कहा, ''इस गेंद में एक टेढ़ा-मेढ़ा छेद है। जाइए, इस छेद में से धागा पार कर के लाइए।''

लोग उस टेढ़े-मेढ़े छेद को लेकर फिर गाँव लौट आए और उसमें धागा आर-पार करने की कोशिश करने लगे। किन्तु धागा था कि कभी किसी मोड़ पर अटक जाता तो कभी किसी मोड़ पर। वे एक बार फिर निराश होकर बैठ गए। उन्हें लगा अब वे अपने बूढ़े माँ-बाप से कभी नहीं मिल सकेंगे। आख़िर गेंसुके फिर माँ के पास पहुँचा और उसे गाँववालों की परेशानी कह सुनाई।

माँ ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''मेरे बच्चे, तुम सभी बहुत भोले हो! जाओ, गेंद के छेद के एक सिरे पर शहद लगा दो और दूसरे सिर से एक चींटी के पेट में धागा बाँधकर उस छेद में छोड़ दो। चींटी शहद की गंध लेती हुई छेद के पार हो जाएगी और इस तरह धागा भी।''

गाँववालों की यह तीसरी परेशानी भी आसानी से हल हो गई और वे राजदरबार में फिर जा पहुँचे। अपनी तीसरी शर्त पूरी हुई देखकर राजा हैरान हो गया। उसने गेंसुके के हाथ से गेंद ले ली और कहा, ''मैं नहीं मानता। लगता है जैसे यह सब तुमने किसी और से सीखा-पूछा है।''

गेंसुके ने उत्तर दिया, ''हाँ, महाराज। आप ठीक ही कहते हैं। राख की रस्सी, घोड़े की पहचान और इस गेंद के टेढ़े-मेढ़े छेद में धागा डालना, यह सब हमारे बूढ़ों ने सिखाया है महाराज! बूढ़े अपने शरीर से कमज़ोर हो जाते हैं, किन्तु उनके पास जीवनभर के अच्छे-बुरे अनुभवों का अपार ख़ज़ाना होता है। हमें उनका और उनके इस ज्ञान का आदर करना चाहिए।'' यह सुनते ही राजा का झूठा घमंड चूर-चूर हो गया। उसे अपनी ग़लती का बहुत पछतावा होने लगा। उसकी आँखें डबडबा आईं।

राजा ने भरे गले से गेंसुके से कहा, ''मैंने बहुत बड़ी ग़लती की। मुझे माफ़ करना। मैं अपना आदेश वापस लेता हूँ। तुम लोग अपने-अपने माँ-बाप को आदर सहित अपने-अपने घरों में लौटा लाओ।''

गाँववाले अपने बूढ़ों को घर लौटा लाये और इसके साथ ही उनकी रूठी खुशियाँ भी उन्हें मिल गईं। गेंसुके घर के नीचे गुफा में छिपी अपनी माँ को बाहर ले आया और उसके पैरों में झुककर प्रणाम करने लगा।

❐

7

लालची बूढ़ा

यह कहानी 'उजि श्यूइ मोनोगातारि' अर्थात् 'उजि' कहानी-संग्रह में वर्णित एक प्रसिद्ध कहानी है। 'कामाकुरा' (Kamakura) युग में 15 खंडों में 196 कहानियाँ लिखी गई हैं। ये सब कहानियाँ जन-साधारण से घनिष्ठ संबंध रखती हैं और हास्य-रस के साथ मनुष्यों की कमज़ोरियों पर उदार दृष्टि दिखाती हैं जो इस ग्रंथ की विशेषता कही जा सकती है। यह कहानी बतलाती है कि मनुष्य को अपने पास कुछ-न-कुछ कुशल कला अपनाकर रखनी चाहिए, ताकि मौक़ा पड़ने पर वह काम आ जाए। व्यर्थ अन्य जनों के सुख पर ईर्ष्या न करें। लोभी होकर कभी दूसरों की नक़ल नहीं करनी चाहिए।

पुरानी बात है। जापान के एक स्थान पर एक सीधा-सादा और ईमानदार बूढ़ा रहता था। उसके दाएँ चेहरे पर नारंगी-जैसा पीला एक बड़ा मांसल पिण्ड लटका रहता था। बूढ़ा व्याकुल था और किसी से मिलना-जुलना नहीं चाहता था। वह अकेले जंगल जाकर ईंधन-लकड़ी जमा करता और उसे बेचकर अपना जीवन चलाया करता। जंगल से लौटने पर थोड़ी शराब पीकर नाचना उसके लिए सबसे अच्छा मनोरंजन का साधन था।

एक दिन बूढ़ा जंगल में ईंधन जमा कर रहा था। अचानक आकाश में बादल छा गए और तेज़ी से वर्षा होने लगी। वह वर्षा से बचने की जगह ढूँढ़ने लगा। पास में उसने एक बड़े पेड़ के कटे तने में खोह देखी। जल्दी-जल्दी वह उसमें छिप गया और वर्षा बंद होने की प्रतीक्षा करने लगा, किन्तु बारिश बंद न हुई और रात हो गई।

आधी रात को ठंडी हवा से उसकी नींद खुल गई। बारिश बंद हो चुकी थी। चाँदनी खोह के भीतर प्रकाश दे रही थी। चाँद आकाश में जगमगा रहा था। पर उसे यह जानकर बड़ी हैरानी हुई कि इस सुनसान जंगल में किसी समूह के हँसी-मज़ाक़, नाच-गाने तथा ताली बजाने की आवाज़ सुनाई दे रही है।

बूढ़े ने खोह से झाँककर बाहर की ओर देखा। उसे इतना डर लगा जैसे उसका दम घुट रहा हो। उसने देखा कि खोह के सामने कई राक्षस गोलाकार बैठक बनाकर चन्द्र-दर्शन का मज़ा ले रहे हैं। सभी के बीच में एक लाल रंग का राक्षस खेल-कूद कर नाच रहा है। हरे और काले रंग के राक्षस भी थे। सभी राक्षस बाघ के चमड़े से बने कमरबंद बाँधे हुए थे।

"कितना सुखदायक नाच है, मैं भी तो साथ-साथ नाचूँ।"

यह सोचकर वह खोह से बाहर निकला और राक्षसों के साथ सम्मिलित हो गया, क्योंकि वह स्वभाव से ही नृत्यप्रिय था।

उसे नाचता देखकर राक्षस डर गए। वे वहाँ से भागने ही वाले थे कि उन्होंने देखा कि थैली जैसा एक बहुत बड़ा पिण्ड बूढ़े के दाएँ चेहरे पर लटक रहा है और वह बहुत अच्छा नृत्य भी कर रहा है। अपने संघ में इस तरह के अजीब मानव को पाकर राक्षस निश्चिन्त हो गए। बूढ़े ने जब नाचना बंद किया, तब उसने एक राक्षस से पूछा, "क्यों भाई! आप को मेरा नाच अच्छा लगा?" तो मुखिया राक्षस ने ताली बजाकर उसकी प्रशंसा की, "हमें तुम्हारा नाच बहुत अच्छा लगा है। आइन्दा पूर्णिमा की रात को हमेशा यहाँ आकर अपना नाच दिखाया करो।"

"अच्छी बात है।"

"किन्तु तुम हमसे कुछ डरते हो और डर के मारे शायद फिर यहाँ नहीं आओगे। अच्छा हो कि अपनी अमिट निशानी तो रखकर जाओ, जो तुम्हारे लिए सबसे मूल्यवान हो।"

"नहीं जी, मैं तो एक ग़रीब आदमी हूँ, हमारे पास ऐसी क़ीमती चीज़ कहाँ।"

"अरे, झूठ मत बोलो! तुम्हारे दाएँ चेहरे पर एक बड़ी थैली है, जिसमें कोई क़ीमती चीज़ छिपी हुई है। उसे यहाँ रख जाओ।"

"यह थैली नहीं है, मांस-पिण्ड है, पिण्ड!"

"इतना बड़ा पिण्ड कैसे हो सकता है? इस थैली को छोड़कर जाओ।"

राक्षस-मुखिया की आज्ञा पर लाल राक्षस ने बूढ़े के चेहरे को हाथ से ऐंठकर बड़े पिण्ड को निकाल दिया। बुड्ढा बहुत घबरा गया। उसने अपने चेहरे पर हाथ लगाया तो पिण्ड ग़ायब था। उसमें न दर्द था, न खुजली। राक्षस ने फिर से अपना नाच शुरू किया।

"भगवान, धन्य भाग मेरे कि बोझ एक पल में उतर गया। इसके कारण मैं वर्षों तक शर्मिन्दा रहा।" इस खुशी में वह फिर राक्षस के साथ नाच में शामिल हो गया। अपने को भुलाकर नाचने लगा।

सुबह हुई तो राक्षस जंगल की ओर चले गये। यह अफ़वाह गाँव में फैल गई कि उस बूढ़े का मांस-पिण्ड राक्षस द्वारा निकाल दिया गया।

इसी गाँव में एक बड़ा लालची बूढ़ा रहता था। उसके बाएँ चेहरे पर बड़ा मांसल पिण्ड लटका हुआ था। उसने सोचा कि मैं भी वहाँ जाकर उन राक्षसों से अपना बोझ उतरवा लूँ। सूर्य डूबते ही वह जंगल की ओर चल दिया और उसी पेड़ की खोह में छिपकर रात का इन्तज़ार करने लगा।

जब चाँद का उदय हुआ तो राक्षस शराब की बोतल हाथ में लेकर खोह के सामने बैठ गया और थोड़ी देर बाद उसने नाचना शुरू कर दिया। बूढ़ा खोह से कूद पड़ा और नाच में शामिल हो गया, किन्तु वह केवल लोभी था। अपने स्वार्थ के लिए हमेशा दौड़-धूप करता था, इसलिए उसे नाच का कोई अभ्यास नहीं था। राक्षस को उसका नाच देखकर घृणा हुई और ग़ुस्सा भी आया। वह बोला, "हम तुम्हारी थैली वापस करते हैं। तू यहाँ से जल्दी भाग जा!"

लाल राक्षस ने वह मांस-पिण्ड जो पहले बूढ़े से निकाला था, उसे लोभी बूढ़े के चेहरे पर फेंक दिया। पिण्ड बूढ़े के चेहरे पर चिपक गया। बूढ़ा दोनों पिण्ड अपने चेहरे पर लटकाए हुए रोते-रोते गाँव की ओर चला गया। उस बूढ़े का चेहरा पहले से और भद्दा दिखाई दे रहा था।

❐

8

अप्सरा के अनोखे कपड़े

इस कहानी का मूल नाम 'हागोरोमो' है और यह 'ओओमि हुदोकि' अर्थात् वर्तमान ज़िला 'सिगा' में संगृहीत प्राचीन लोककथा से ली गई है, जो जापान के शास्त्रीय नाटक 'उताइ' में भी प्रदर्शित की जाती है। इस कहानी में अपने स्वर्ग जानेवाली अप्सरा और इहलोक में रहनेवाले मनुष्य का स्वप्न तथा कल्पनात्मक दुनिया के प्रति मनुष्यों की जिज्ञासा पर प्रकाश डाला गया है।

पुराने ज़माने की बात है। किसी जंगल में एक बहुत बड़ा सुन्दर तालाब था। इस तालाब के पास एक जवान मछुआरा अपनी माँ के साथ रहता था। वह हर रोज़ मछली पकड़ने जाता और उसे बाज़ार में बेचकर अपना जीवन-निर्वाह किया करता था।

एक दिन वह अपने काम से थककर तालाब के किनारे एक पेड़ के नीचे लेटकर आराम कर रहा था। उसने देखा कि एकाएक आकाश की ओर से सफ़ेद पेटी जैसी कोई लम्बी चीज़ एक क़तार में नीचे की ओर उतर रही है। 'यह सफ़ेद बादल तो नहीं!' उसने ध्यान से देखा तो वे सात सारस थे। जंगल के एक चीड़ के पेड़ पर बैठते ही वे सारस सहसा सात सुन्दर लड़कियों के रूप में बदल गए। वे लड़कियाँ अपने-अपने महीन वस्त्र उतारकर तालाब के भीतर जाकर तैरने लगीं। मछुआरा आश्चर्यचकित होकर उठ गया और थोड़ी देर तक इस दृश्य को देखता रहा।

''ऐसी अजीब बात क्या हो सकती है!'' मन में सोचते हुए वह उस पेड़ के पास पहुँच गया, जहाँ कपड़े उतारकर रखे हुए थे। सातों लड़कियाँ हरे तालाब में गोता लगा-लगाकर मस्तीपूर्वक खेल रही थीं। मछुआरे को लगा कि बहुत ख़ुशबूदार महक कहीं से आ रही है। उसने ऊपर देखा, तो पाया कि पेड़ पर टँगे हुए एक महीन वस्त्र से ही यह गंध आ रही थी। उसने सोचा कि वह शायद अप्सरा का वस्त्र हो और अप्सरा सारस के रूप में उतर आई हों। वह इस ख़बर को अपने गाँववालों को अभिमानपूर्वक देना चाहता था, किन्तु सबूत के बिना कौन उसका विश्वास करेगा?

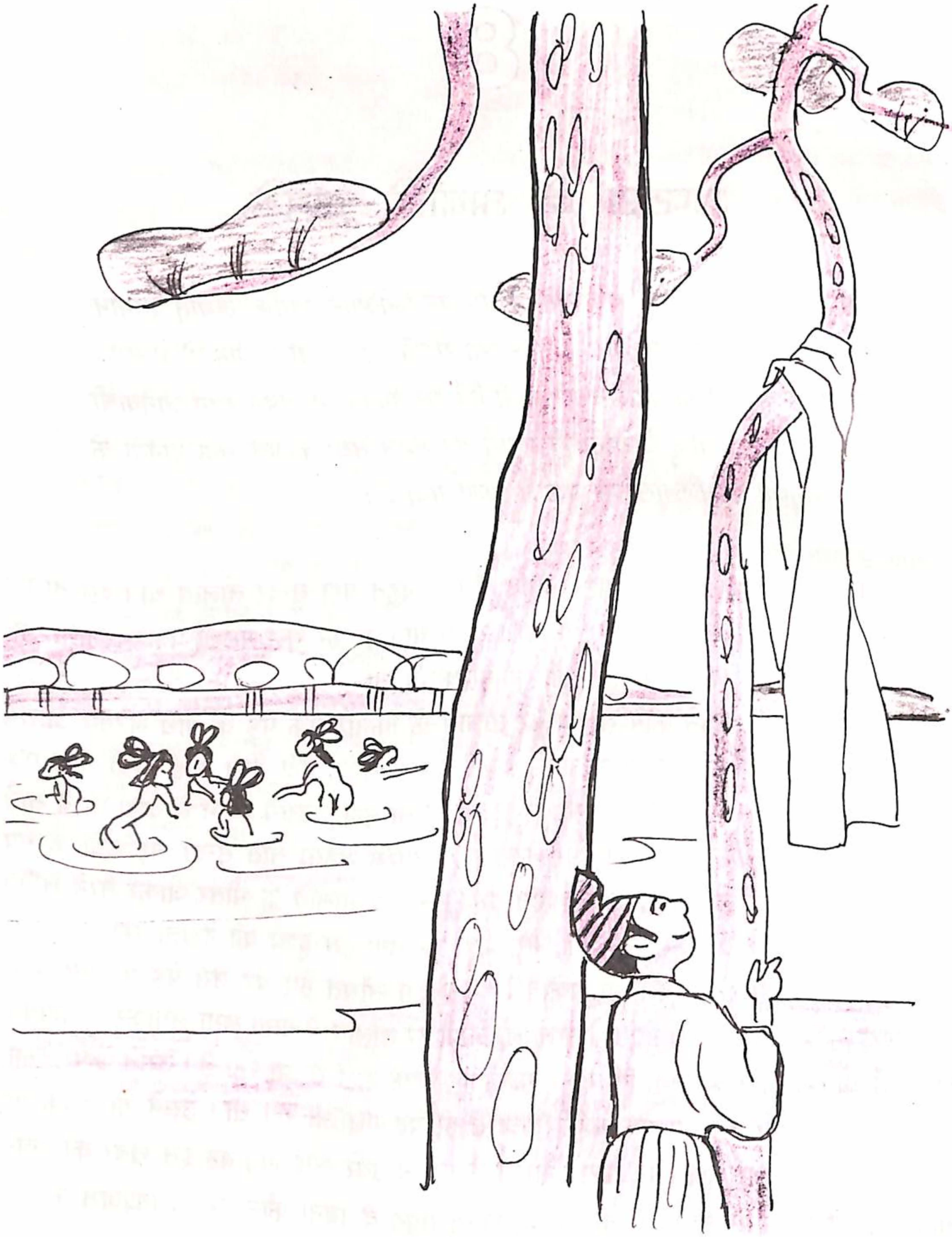

"अच्छा! यह दिव्य वस्त्र देखने से सब लोग विश्वास कर लेंगे।" यह सोचकर उसने चीड़ की डाल से वस्त्र उतारकर छिपा लिया।

इतने में अप्सराएँ तालाब से बाहर आकर धूप में अपना शरीर सुखाने लगीं और उन्होंने अपने-अपने वस्त्र पहन लिए। तभी अचानक वे छह लड़कियाँ छह सारसों के रूप में बदल गईं। किन्तु बची हुई एक अप्सरा घबराकर भटकने लगी, "मेरा वस्त्र कहाँ गया?" इस पर मछुआरे ने उन्हें आवाज़ दी। उसकी आवाज़ सुनते ही छह सारस भयभीत होकर एक क्षण में उड़ गये और आकाश की ओर कहीं ग़ायब हो गए।

अकेली रह गई अप्सरा मानव की आवाज़ सुनकर और भी परेशान हो गई। उसने लम्बी घास के अंदर छिपकर मछुआरे से विनती की कि वह उसके वस्त्र उसे वापस कर दे। मछुआरे ने कहा, "न, न, यही है, अप्सरा का दिव्य वस्त्र, ऐसा अनोखा रत्न मानव-संसार में एक तो छोड़ जाइए।"

"नहीं, नहीं! वापस कीजिए। उसके बिना मैं अपनी दुनिया में वापस नहीं जा सकती। कृपया उसे वापस कर दीजिए।"

हाथ जोड़कर रोती हुई अप्सरा ने कई बार विनती की। इस पर भी मछुआरा उस दिव्य वस्त्र को अन्य लोगों को दिखाने की उत्कृष्ट इच्छा के कारण वापस करने को तैयार न था। उसे लेकर वह अपने घर की ओर चलने लगा। अप्सरा लाचार थी। अपने लम्बे बालों से वह अपने नंगे बदन को ढँकने की कोशिश करने लगी। मछुआरे से यह नहीं देखा जा सका। उसने अपने कपड़े उतार कर उ़से दे दिये। इन्हें पहनकर अप्सरा उसके पीछे-पीछे चलने लगी।

मछुआरा अप्सरा को लेकर अपनी माँ के सामने उपस्थित हुआ और सारा क़िस्सा उसे सुनाया। माँ को अप्सरा की सुन्दरता पर आश्चर्य हुआ। उसने सिर झुकाकर उससे कहा, "धन्य हैं हम, जो आपने हमारे घर में पधारने का कष्ट किया। बहुत दिनों से मैं अपने बेटे के लिए बहू की तलाश कर रही थी। अपने दिव्य वस्त्रों के बिना आप अपनी दुनिया में वापस नहीं जा सकतीं। कृपया आप सब कुछ भूलकर मेरे बेटे की बहू होना स्वीकार करें।"

अप्सरा को न तो दिव्य वस्त्र वापस मिल सकता था और न वह अपने लोक में लौट सकती थी। आख़िर उसने मछुआरे से शादी करना तय कर लिया। मानव जीवन में जितने भी आवश्यक काम करने पड़ते हैं, वह सब कुछ मेहनत से करने लगी। कभी पति के साथ मछली पकड़ने समुद्र में जाती, तो कभी घर में माँ के साथ भोजन बनाने में हाथ बँटाती। सभी काम हँसी-खुशी, सावधानी और जल्दी से कर लेती। इस पर मछुआरे की माँ बहुत ख़ुश रहती।

एक साल बीता, दो साल बीते और तीसरे साल की वसंत आ गई। एक दिन मछुआरे की माँ ने अपनी बहू से कहा, ''चारों ओर बहुत अच्छा मौसम है। फूल खिल उठे हैं। परिन्दे चहक रहे हैं। आज मानव संसार भी परी लोक से कम नहीं है।''

''सच कह रही हैं, आप। परी लोक के बारे में मैं तो भूल ही गई हूँ।''

''क्या दिव्य वस्त्र की याद नहीं आती है।''

''नहीं, कभी सपने में भी नहीं।'' अप्सरा बोली।

''मेरे बेटे ने तुम्हारे दिव्य वस्त्र को छिपाया था, पर ऐसे अच्छे मौसम में उसे बाहर निकालना चाहिए। नहीं तो ऐसे क़ीमती वस्त्र को कीड़ा खा जाएगा, बेटा उसी की चिन्ता करता था।'' इस पर बहू ने कहा, ''अब तो मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है, पर थोड़ी-सी हवा और धूप में सुखाने से अच्छा रहेगा।''

''ठीक बात है, ऐसा ही करेंगे।''

मछुआरे की माँ ने एक सन्दूक़ में से दिव्य वस्त्र निकाला, तो उसकी सुगंध कमरे भर में फैल गई।

"एक बार फिर से और इसे पहनने की इच्छा होती होगी तुम्हें, नहीं!...संकोच न करो, पहन कर देख लो।"

"अच्छा!" बहू ने माँ को प्रणाम करके दिव्य वस्त्र पहन लिया।

एकाएक क्या हुआ कि वह एक सफ़ेद सारस के रूप में बदल गई। खिड़की से आकाश की ओर उड़ गई, उड़ती ही चली गई।

माँ आश्चर्यचकित हुई और घर से बाहर आकर चिल्लाने लगी, "अरे...! कोई आओ मेरी बहू को बचाओ।"

मछुआरा उस समय मछली पकड़ने समुद्र में गया हुआ था। माँ की पुकार केवल जंगल में गूँजती चली जा रही थी।

सारस मछुआरे के घर के ऊपर दो-तीन बार चक्कर लगाकर आकाश की ओर कहीं ग़ायब हो गया। प्रकृति कुछ ऐसे मौन थी, जैसे कोई घटना घटी ही न हो।

❐

9

ओएयामा का दानव-हरण

यह कहानी जापान के प्राचीन कथा-साहित्य 'ओतोगि नोसोसि' से ली गई है। पता नहीं है कि लेखक कौन थे। 'ओतोगि' का अर्थ है श्रोता और 'सोसि' का अर्थ होता है—पुस्तक। यह ग्रंथ मुरोमाचि-युग से लेकर ऐडो-युग के बीच किसी समय लिखी गई छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह है। मूल ग्रंथ में 23 कहानियाँ संकलित की गई थीं, बाद में जोड़ते-जोड़ते संख्या पाँच सौ तक पहुँच गई। यह संग्रह मोटे तौर पर पाँच विषयों में विभाजित है, जो बौद्ध भिक्षु, संन्यासी, शिक्षित योद्धा, शहरी जनता और अनोखी पुस्तकों पर है। यह ग्रंथ 'कामाकुरा' युग के कथा-साहित्य के बाद धीरे-धीरे संगृहीत होकर 'ऐडो' युग के कथा-साहित्य के अग्रदूत के रूप में बन गया था। इस कहानी का मूल नाम 'प्युतें दोजि' है। जापान की प्राचीन राजधानी 'क्योटो' के नज़दीक 'ओएयामा' नामक ऊँचा पर्वत है। यह कहानी उस पर रहनेवाले एक डाकू की है। एक वीर योद्धा अपना वेश बदलकर एक डाकू की गुफा में प्रवेश करता है और उसे शराब पिलाकर उसका वध करता है। यह वीर रस की कहानी जापान के प्रसिद्ध शास्त्रीय गान-नाटक 'नोह' में भी स्वीकृत की गई। इस कहानी द्वारा हमें यह सीख मिलती है कि स्वार्थवश केवल अपनी समृद्धि के लिए जीनेवालों का निश्चित रूप से विनाश हो जाएगा।

जापान के 'तम्बा' ज़िले में एक बहुत ऊँचा पर्वत था, जिसका नाम था ओएयामा। इस पर्वत पर एक दानव रहता था, जिसका शरीर इतना विशाल था कि जैसे कोई पर्वत खड़ा हो। जहाँ भी महिलाओं को देखता था, उठा ले जाता। सारे जापान में उसका आतंक फैला हुआ था। जनता दुःखी होकर जापान के सम्राट के पास गई। सारी बात कही। उन्होंने दानव का विनाश करने के लिए देश के सबसे वीर सरदार 'मिनामोटो राइको' को बुलाया।

राइको ने भी उस दानव के बारे में सुना था। वह उससे डरता था। वह जानता था कि आमने-सामने की लड़ाई में दानव को कभी नहीं मार सकेगा। बहुत सोच-विचार कर उसने अपने शिष्यों में से पाँच वीरों को चुना। उन्हें दानव के बारे में विस्तार से सारी बातें बताई और कहा, ''यदि हम सैनिकों के वेश में ओएयामा पर जाएँगे, तो दानव हमारे आने का मतलब समझ जाएगा। अच्छा यही है कि हमलोग संन्यासियों के वेश में वहाँ तक जाएँ और दानव का पता लगाकर जैसे भी हो, उसे मार डालें।''

राइको की योजना सभी ने मान ली। पाँच वीरों ने संन्यासियों का वेश बनाया। अपने थैलों में तलवार और कवच छिपाकर रखे। तीन-तीन की टोली में वे ओएयामा की ओर चल पड़े।

चलते-चलते एक दिन वे एक गुफा के पास पहुँचे। गुफा के दरवाज़े पर सफ़ेद बालोंवाले तीन बूढ़े बैठे थे। राइको और साथियों को देखकर उन्होंने पूछा, ''आप लोग कौन हैं?''

राइको सही उत्तर देता-देता रुक गया। उसने सोचा, 'कहीं वह दानव ही वेश बदलकर अपने साथियों के साथ बूढ़ों के रूप में न आ बैठा हो।' उसे झिझकता देख एक बूढ़ा बोला, ''हम यहाँ बरसों से बैठे हैं। बरसों पहले ओएयामा का दानव हमारी लड़कियों को उठा लाया था। हम उन्हीं के तलाश में आए थे, मगर यहाँ से आगे नहीं जा सके। अब इसी आशा में यहाँ बैठे हैं कि शायद किसी दिन हमारी लड़कियाँ लौट आएँ।''

बूढ़ों का दुःख सुनकर राइको और उसके साथियों की आँखें भर आईं। वे उन बूढ़ों को घेरकर बैठ गए। अब राइको ने भी उन्हें अपने आने का कारण बता दिया।

एक बूढ़ा बोला, ''वह दानव बहुत शक्तिशाली है। लड़ाई करके उसे नहीं मारा जा सकता। हमारे पास एक मटका शराब है। इस शराब में यह ख़ूबी है कि अगर इसे मनुष्य पी ले, तो उसमें ताक़त आ जाती है, जबकि अगर इसे दानव पी ले, तो वह नशे में धुत्त होकर बेहोश हो जाता है। दानव और उसके साथी शराब बहुत पसंद करते हैं। किसी तरह उन्हें आप यह शराब पिला सकें, तो निश्चय ही वह दानव मारा जा सकता है।''

शराब से भरा मटका लेकर राइको ने बूढ़ों को धन्यवाद दिया। फिर कुछ देर बाद अपने साथियों के साथ आगे बढ़ चला। कई बियाबान जंगल पार करके वे लोग एक नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ उन्हें कुछ स्त्रियाँ लाल रंग के कपड़े धोती हुई मिलीं। उन्होंने राइको और उनके साथियों को देखा, तो भागकर उनके पास आईं और बोलीं, ''अरे! आप लोग कहाँ आ गए? ऊँचे पर्वत पर बैठे दानव के सिपाहियों ने आप लोगों को देख लिया होगा, जल्दी पीछे लौट जाइए।''

"तुम लोग कौन हो?" राइको ने एक महिला से पूछा। उसने कहा, "हमें ओएयामा का दानव पकड़ लाया था। वह हम से बेगार कराता है। काम न करने पर कोड़ों से मारता है। हम यहाँ से भाग भी नहीं सकते। यहाँ दानव के साथी चौबीसों घंटे हमारी रखवाली करते रहते हैं।" महिला की बात सुनकर राइको की आँखों में आँसू आ गए। उसने महिला से उस दानव के रहने की जगह पूछी। तिस पर उसने डरते-डरते एक ओर उँगली उठा दी।

राइको ने देखा, पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर एक दुर्ग था। महिला से शीघ्र मिलने का वायदा करके राइको और उसके साथी आगे चल दिए। उन्होंने अभी पर्वत की आधी चढ़ाई भी नहीं चढ़ी थी कि दानव के सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया। "कौन हो तुम लोग?" सिपाहियों के मुखिया ने गरजकर कहा।

"हमलोग संन्यासी हैं।" राइको बोला, "किसी एकान्त जगह की खोज कर रहे हैं, ताकि वहाँ बैठकर तप कर सकें। तुम लोग कौन हो? हमें क्यों घेरे खड़े हो?"

"क्यों घेरे खड़े हैं, अभी बताते हैं।" कहते हुए सिपाही उन्हें पकड़कर ओएयामा के दानव के पास ले गए।

दानव क्या था, ताँबे के रंग जैसा एक पहाड़ था। उसके ढोल जैसे चेहरे पर मूँछ-दाढ़ी घास के घने जंगल की तरह फैली थी। सिर तो जैसे पूरा गन्ने का खेत ही था। एक-एक बाल गन्ने जितना मोटा और सख़्त था। बीच में दो बड़े-बड़े सींग खड़े थे।

"कौन हैं ये?" दानव चिल्लाया। राइको ने ज़मीन पर माथा टेककर तीन बार दानव को नमस्कार किया, फिर कहा, "दानवराज, हम संन्यासी हैं। जंगल में तप करने निकले थे। ग़लती से हम आपके राज्य में आ गए। क्षमा करें। हम अभी वापस चले जाते हैं।"

"हूँ— संन्यासी हो। मोटे-तगड़े संन्यासी ख़ूब काम करेंगे। तुम मेरे बंदी हो। अरे, इस मटके में क्या है?" दानव ने पूछा।

"कुछ नहीं, जंगल में तप करना था। हमने सोचा, शराब ही ले चलें। भूख-प्यास में काम आएगी। इसमें शराब भरी है।"

शराब का नाम सुनते ही दानव के कान खड़े हो गए। उसके मुँह से लार टपकने लगी। उसने ललचाई नज़रों से मटके की ओर देखा। फिर ठहाका मारकर गरजा, "बहुत दिन से शराब चखी भी नहीं। आज रात के खाने के साथ सभी नाचेंगे, गाएँगे, ख़ुशी मनाएँगे।"

"महाराज, मैं शराब आप को यूँ ही भेंट कर दूँगा।" अगले ही क्षण मटका दानव के हाथ

में था। रात को ओएयामा पर्वत पर दानव और उसके साथियों की दावत शुरू हुई। बहुत दिन बाद उन्हें शराब मिली थी। राइको और उसके साथी दूर बैठे थे। वे पीते हुए दानव को देखकर मन-ही-मन खुश हो रहे थे।

शराब का असर होने लगा। शराब पीकर दानव सुध-बुध खोने लगे। नशे में वे बेतहाशा उछल-कूद मचा रहे थे। वे लोग इतना उछले-कूदे कि बुरी तरह थक गये। फिर वे ज़मीन पर लुढ़क गए। राइको और उसके साथी इसी इंतज़ार में थे। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपने थैले खोले, कवच पहने, फिर तलवार लेकर उन पर टूट पड़े।

पलभर में ही उन्होंने बहुत से दानवों के सिर काट कर फेंक दिए। कुछ दानवों ने भागने की कोशिश भी की, मगर लड़खड़ाकर गिर गए। दानवों का सरदार दीवार के सहारे बैठा ऊँघ रहा था। राइको इस पर झपटा, मगर तभी वह खड़ा हो गया।

राइको ने अपने-अपने साथियों को आवाज़ दी। सारे वीर एक साथ दानव पर टूट पड़े। दानव ने लड़ने की कोशिश की, मगर घायल होकर गिर पड़ा। उसके प्राणपखेरू उड़ गए। दानव के मरते ही सारी महिलाएँ आज़ाद हो गईं। राजा ने भी दानव के मरने की ख़बर सुनी। उसने राइको और उसके साथियों को बहुत-सा पुरस्कार दिया।

❐

10

सारस अपने शक्ल-स्वरूप के कारण एक पवित्र तथा रहस्यमय पक्षी माना जाता है। चीन में यह सारस 'फ़िनिक्स' पक्षी के बाद सर्वाधिक सम्मान्य माना जाता है और जापान में उसे ईश्वर का दूत या ईश्वर का वाहन भी कहा जाता है। यह भी लोग मानते हैं कि कछुए के साथ सारस दीर्घ जीवन का शुभ मंगलमय प्रतीक है। यदि स्वप्न में उसे देखा जाए, तो कोई समृद्ध बन जाएगा। उक्त कहानी में एक सारस एक मानव को अपना ऋण चुकाने के लिए समृद्ध बनाता है। कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक तुच्छ प्राणी के लिए भी दया दृष्टि रखनी चाहिए।

बहुत पुरानी बात है। जापान में एक युवक अकेला रहता था, जिस के माँ-बाप चल बसे थे। वह बहुत मेहनती था। सवेरे बहुत जल्दी उठकर रात को देर तक काम करता था। हर रोज़ या तो खेत जोतता था या पहाड़ पर जाकर ईंधन इकट्ठा करता था। खेत में जो सब्ज़ी पैदा करता था, उसे शहर में बेच आता था। वह युवक बहुत दयालु था। दीन-दुखियों को देखते ही खाना-कपड़ा दे देता।

एक दिन वह शहर से सब्ज़ी बेचकर वापस आ रहा था। रास्ते में एक सारस अपने पंख फैलाकर आकाश से तालाब के किनारे उतरा। ''अरे! कितना सुन्दर सारस है।'' वह एक क्षण रुककर बर्फ़ जैसे सफ़ेद और सुन्दर सारस को देखने लगा। सारस ने अपने पंख समेटे और लंबी गर्दन बढ़ाई। उसने दो-तीन क़दम चलकर भोजन की तलाश में अपनी चोंच पानी के अन्दर डाल दी।

उसी क्षण युवक ने देखा कि एक शिकारी एक पेड़ की छाया में छिपकर सारस की ओर ताक रहा है। युवक जल्दी से शिकारी का हाथ पकड़कर बोला, ''रुको, मत मारो उसे!''

युवक ने अपनी सारी कमाई शिकारी को दे दी। शिकारी ने अपना धनुष उतार दिया। सारस आकाश की ओर उड़ गया।

जाड़े का दिन था। एक दिन सुबह से बर्फ़ गिर रही थी। युवक कहीं बाहर जा नहीं सकता था। उसी समय किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। "कौन है? अंदर आइए।" युवक ने कहा। दरवाज़ा खुला और एक सुन्दर लड़की बाहर खड़ी दिखाई दी।

"मैं एक यात्री हूँ। बर्फ़ अधिक गिरने के कारण मैं आगे नहीं चल सकती, मुझे ज़रा आराम करने दीजिए।"

"ज़रूर, ज़रूर।" युवक बोला, "अरे आपको बहुत कष्ट हुआ होगा। अंदर आइए।"

लड़की ने युवक के दयालु व्यवहार के प्रति आभार प्रकट किया और खाने की तैयारी, सफ़ाई, सिलाई सभी काम-काज सफलतापूर्वक करने लगी। इतना ही नहीं, बल्कि बर्फ़ गिरना बंद होने पर भी वह कहीं जाने को तैयार नहीं हुई। बोली, "मैं आपके घर में पड़े करघे से कुछ कपड़े बुनना चाहती हूँ।"

"अच्छी बात है।" युवक ने कहा। करघा युवक की माँ चलाया करती थी। लड़की बोली, "जब तक मैं करघा चलाती हूँ, तब तक आप कभी न अंदर आएँ और न झाँककर देखें।"

लड़की ने दरवाज़ा अच्छी तरह बंद कर लिया और कपड़ा बुनने लगी। वह खाना-पीना छोड़कर बुनाई में ही लग गई। तीन दिन के बाद कपड़ा तैयार हो गया। वह उसे लेकर युवक के पास आई

ओर बोली, ''कपड़ा तैयार है। आप इसे शहर ले जाकर बेच दीजिए। ऊँचे दाम पर बेच सकेंगे।''

''बहुत सुंदर!'' एक क्षण उसे देखकर युवक को आश्चर्य हुआ। युवक का घर चौराहे पर पड़ता था, जिससे कई पथिक आते-जाते थे। एक दिन युवक जब इस सुन्दर कपड़े को फैलाकर देख रहा था, तभी उसे देखकर भीड़ जमा होने लगी। लोग बोलने लगे, ''कितना सुन्दर कपड़ा है, हम तो पहले-पहल देख रहे है।'' इसी भीड़ में एक योद्धा था, जो अपने सरदार के हुक्म के अनुसार राजधानी में रेशम का श्रेष्ठ कपड़ा ख़रीदने आया हुआ था, किन्तु न मिलने से निराश होकर अपने देश को लौट रहा था। वह बोला, ''मुझे वह कपड़ा ज़रूर चाहिए।'' उसने काफ़ी पैसा देते हुए कहा, ''और दूसरा कपड़ा भी बुनकर दीजिए। जब तक तैयार न हो, तब तक मैं शहर की सराय में प्रतीक्षा करता रहूँगा।'' यह कहते हुए योद्धा उस सुन्दर कपड़े को लेकर ख़ुशी-ख़ुशी चला गया।

युवक शहर जाकर धागा ख़रीद लाया। लड़की धागा लेते हुए बोली, ''देखियेगा नहीं।'' ''ज़रूर, ज़रूर।'' युवक बोला। करघाघर से बुनने की आवाज़ आती रही। तीन दिन हो गए। ''अब तैयार होनेवाला है, किन्तु इतना सुन्दर कपड़ा यह कैसे बुनती है।'' युवक देखने को उत्सुक था। वह अपनी प्रतिज्ञा भूलकर करघाघर के पास गया। उसने चुपके से झाँककर देखा।

उसने अचरज भरी आँखों से देखा कि लड़की नहीं, बल्कि एक सारस अपने सुंदर पंख को फैलाते हुए चोंच से निकाल-निकालकर धागे में मिलाते हुए कपड़ा बुन रहा है। पहले से भी सुन्दर कपड़ा तैयार होने में थोड़ी ही देर थी, किन्तु अब सारस की दशा इतनी दयनीय हो गई थी कि पंख टूटकर इधर-उधर गिर रहे थे और वह अधनंगा हो गया था। इतने में करघे की आवाज़ अचानक बंद हो गई। लड़की तैयार कपड़ा लेकर बाहर निकल आई। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

''किसी दिन आपने मेरी जान बचायी थी, मैं उसी दिन का सारस हूँ। प्रतिदान करने की इच्छा से रूप बदलकर आया था, पर असली रूप का पता लग जाने से विदाई देनी पड़ेगी।''

तैयार किए हुए कपड़े युवक को देकर वह रोते हुए घर से बाहर भाग निकली। युवक ने उसका पीछा किया, किंतु लड़की के स्थान पर चाँद-सा चमकता हुआ एक सारस आकाश की ओर उड़ रहा था।

युवक अपने किए पर पछता रहा था। सारस ने ज़ोर से चीख़ते हुए हमेशा के लिए विदाई दी और युवक के ऊपर तीन बार चक्कर लगाकर उड़ गया।

115990
17.11.04
SHIMLA

साहित्य अकादेमी

बाल साहित्य प्रकाशन

अंतरिक्ष में विस्फोट	जयंत विष्णु नारलीकर	30 रुपये
अचरजग्रह की दन्तकथा	ताजिमा शिन्जी	40 रुपये
कबूतरों की उड़ान	रस्किन बांड	30 रुपये
किशोर कहानियाँ	विभूतिभूषण बन्द्योपाध्याय	40 रुपये
गोट्या	ना.धो. ताम्हनकर	25 रुपये
ग्रिम बन्धुओं की कहानियाँ (दो भागों में)	जैकोब लुडबिग कार्ल ग्रिम तथा विलहेम कार्ल ग्रिम	150 रुपये (प्रति भाग)
गोसाईं बागान का भूत	शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय	30 रुपये
चन्द्र पहाड़	विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय	30 रुपये
जंगल टापू	जसबीर भुल्लर	40 रुपये
जंगल की एक रात	लीलावती भागवत	25 रुपये
निर्बुद्धि का राज काज (लोककथाएँ)	गोपाल दास	30 रुपये
प्रेमचन्द : चुनिन्दा कहानियाँ	प्रेमचन्द	30 रुपये (प्रति भाग)
बच्चों ने दबोचा चोर (नाटक)	गंगाधर गाडगील	25 रुपये
बिल्ली हाउस बोट पर (कहानी)	अनिता देसाई	25 रुपये
बुलबुल की किताब	उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी	35 रुपये
मोरोंवाला बाग़	अनिता देसाई	30 रुपये
रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य (दो भागों में)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	30 रुपये (प्रति भाग)
लासारो (उपन्यास)	अज्ञात	30 रुपये
लघुकथा संग्रह (दो भागों में)	चयन एवं सम्पादन : जयमन्त मिश्र	40 रुपये
वनदेवी (विज्ञान कथा)	'कल्वी' गोपालकृष्णन	25 रुपये
सुनो कहानी	रूपान्तरकार : विष्णु प्रभाकर	25 रुपये
हैंस एण्डरसन की कहानियाँ (दो भागों में)	हिन्दी अनुवाद : हरि	
जापान की कथाएँ	साईजी माकिनो	

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 289 J
00115990

ISBN : 81-260-1218-8

मूल्य : चालीस रुपये